॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

६३

॥ श्रीः ॥

ज्यौतिष-प्रश्न-फलगणना

'विमला' हिन्दीव्याख्योपेता

व्याख्याकार और सम्पादक :—

दैवज्ञ श्री पं० दयाशङ्कर उपाध्याय

(काशिराज-ज्योतिषी, रामनगर, वाराणसी)

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

१९७५

प्राक्कथन

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ।।

तथा च

शुभक्षणक्रियारम्भजनितापूर्वसम्भवाः ।
सम्पदः सर्वलोकानां ज्यौतिषस्य प्रयोजनम् ।।

शुभ लक्षण में किये हुए आरम्भ कर्मों से उत्पन्न पुण्य के द्वारा सकल प्राणियों की सम्पत्तियों की प्राप्ति 'ज्यौतिष' शास्त्र के ही अनुग्रह से होती है। 'ज्यौतिष' के समान प्रत्यक्ष शास्त्र दूसरा कोई नहीं है, सूर्य-चन्द्रमा इसके साक्षी हैं।

ज्यौतिष-शास्त्र के मुख्य तीन स्कन्ध (भेद) हैं। १. गणित स्कन्ध, २. होरा स्कन्ध और ३. संहिता स्कन्ध। गणित स्कन्ध के द्वारा—भूगोल-खगोल आदि का ज्ञान होता है। होरा स्कन्ध में जातक, ताजक और प्रश्न यह तीन प्रकार हैं और संहिता स्कन्ध में गर्गादि संहिता, रमल के ग्रन्थ, स्वर-शास्त्र, शकुनग्रन्थ, सामुद्रिक, वास्तु विद्या और मुहूर्त के ग्रन्थ हैं।

यद्यपि 'ज्यौतिष' के सब विषय के ग्रन्थ को पढ़ना आवश्यक है, परन्तु 'प्रश्नफल गणना' यह विषय ऐसा है कि—इसके बिना किसी धर्मावलम्बी का क्षण-मात्र भी कार्य नहीं चल सकता। प्रतिदिन अनेकों प्रकार के 'प्रश्न फल' जानने की आवश्यकता पड़ती रहती है, अतः सर्वसाधारण के हितार्थ 'षडङ्गवेद' का 'नेत्रभूत' ज्योतिःशास्त्रान्तर्गत 'प्रश्न' ग्रन्थ ही तात्कालिक अद्भुत फल कहने में प्रधानतया सर्वोपरि विराजमान है।

प्राचीन उत्तम-उत्तम प्रश्न के बृहद् ग्रन्थ जैसे—

षट्पञ्चाशिका १, प्रश्नप्रदीप २, भुवनदीपक ३, प्रश्नभैरव ४, प्रश्नसिन्धु ५, प्रश्नशिरोमणि ६, प्रश्नचण्डेश्वर ७, प्रश्नमार्ग ८, प्रश्नज्ञानप्रदीप ९, प्रश्न-दीपिका १०, प्रश्नभूषण ११ आदि अनेकों ग्रन्थ उपलब्ध हैं एवम् इस प्राचीन

'प्रश्नफल गणना' में 'प्रश्न' के अनेक तरह के फलादेश के लिये षट् प्रकार से वर्णन है और परिशिष्ट में श्री महादेव-देवी का संवाद वर्णन है। जो मुष्टिकादि प्रश्न-ज्ञान के लिये अद्भुत है। इसमें सर्वसाधारण मनुष्यमात्र के लिये सरल, सुबोध भाषा टीका में ज्योतिष शास्त्र के तीन स्कन्धों का तत्त्वभूत है।

महर्षि प्रणीत नाना प्रश्न ग्रन्थों का सार रूप 'प्रश्नफल गणना' नाम से यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है। आशा है समस्त सज्जन इससे लाभ उठायेंगे और इसमें जहाँ-कहीं त्रुटि, अशुद्धि हो उसको सुधार कर क्षमा करेंगे।

मकर संक्रान्ति
वि० सं० २०१९

निवेदक—
दयाशंकर उपाध्याय

विषय-सूची

॥ श्रीः ॥

ज्यौतिष-प्रश्न-फलगणना

अथ प्रथमं प्रकरणम्

चर-स्थिर-द्विस्वभाव-विधायकचक्रम्

१. मेष—चर	७. तुला—चर
२. वृष—स्थिर	८. वृश्चिक—स्थिर
३. मिथुन—द्विस्वभाव	९. धनु—द्विस्वभाव
४. कर्क—चर	१०. मकर—चर
५. सिंह—स्थिर	११. कुम्भ—स्थिर
६. कन्या—द्विस्वभाव	१२. मीन—द्विस्वभाव

चरे लग्ने चरे सूर्ये चरराशौ शशी यदा ।
तदा सिद्धिफलं नूनं वक्तव्यं गणकोत्तमैः ॥ १ ॥

जिस समय प्रश्न करने वाला कोई मनुष्य किसी कार्य विषय का प्रश्न करे—उस काल में मेष-कर्क इत्यादि कोई चर लग्न वर्त्तमान हो और इन राशियों में अर्थात् चर ही राशि मे सूर्य हो और चन्द्रमा भी चर ही राशि का हो तो कार्य की सिद्धि निश्चय करके कहना चाहिये ॥ १ ॥

चरलग्ने चरे सूर्ये स्थिरे राशौ शशी भवेत् ।
तदा सिद्धिर्न वक्तव्यमशुभं च भविष्यति ॥ २ ॥

यदि प्रश्न काल में लग्न चर हो और चर राशि का सूर्य हो और स्थिर राशि में चन्द्रमा हो तो कार्य की सिद्धि नहीं कहना ॥ २ ॥

चरलग्ने स्थिरे सूर्ये चन्द्रमा स्थिर एव च ।
कार्यभ्रंशो न सख्यं च विग्रहं च पदे पदे ॥ ३ ॥

प्रश्न काल में लग्न चर हो और स्थिर में सूर्य हो और चन्द्रमा भी स्थिर ही लग्न में हो तो कार्य का नाश कहना और यदि मित्रता का प्रश्न हो तो

किसी का उस समय चर लग्न हो, स्थिर में सूर्य-चन्द्रमा हो तो सख्य नहीं कहना पद-पद में विग्रह कहना ॥ ३ ॥

चरलग्ने स्थिरे सूर्ये चरभावे शशी यदा।
तदा लाभो धनं धान्यं वृद्धिभावश्च दृश्यते ॥ ४ ॥

और प्रश्न समय का लग्न चर हो और स्थिर में सूर्य हो और चर राशि के जो चन्द्रमा हो तो लाभ-धन,धान्य की वृद्धि कहना ॥ ४ ॥

चरलग्ने द्विस्वभे सूर्ये चरे वा चन्द्र एव च।
बन्धनं च महाक्लेशो महद्दु:खं महाभयम् ॥ ५ ॥

प्रश्न काल में लग्न चर हो और द्विस्वभाव जो मिथुन-कन्या आदि उसमें सूर्य हो और चन्द्रमा चर राशि का हो तो बन्धन-महाक्लेश-दुःख-भय कहना ॥५॥

चरलग्ने द्विस्वभे सूर्ये द्विस्वभावेषु चन्द्रमाः।
बन्धनं द्रव्यनाशं च चित्तमुद्वेगकारकम् ॥ ६ ॥

जो प्रश्न लग्न चर हो और द्विस्वभाव मे सूर्य हो और चन्द्रमा भी द्विस्वभाव का हो तो बन्धन-द्रव्य का नाश चित्त में उद्वेग करे ॥ ६ ॥

चरलग्ने स्थिरे सूर्ये द्विस्वभावेषु चन्द्रमाः।
मध्यमं तं विजानीयात् फलसिद्धिर्न दृश्यते ॥ ७ ॥

प्रश्न का लग्न चर हो और स्थिर मे सूर्य हो और द्विस्वभाव में चन्द्रमा हो तो मध्यम फल कहना—कार्य की सिद्धि न करेंगे ॥ ७ ॥

चरलग्ने द्विस्वभे सूर्ये स्थिरराशौ गतः शशी।
मध्यमं च विजानीयात् फलसिद्धिर्न दृश्यते ॥ ८ ॥

जो प्रश्न लग्न चर हो और द्विस्वभाव मे सूर्य हो और चन्द्रमा स्थिर राशि में हो तो भी मध्यम फल कहना—फल की सिद्धि न करेंगे ॥ ८ ॥

चरलग्ने चरे सूर्ये द्विस्वभावेषु चन्द्रमाः।
क्षेमं सौख्यप्रसिद्धिश्च पुत्रवृद्धिर्धनागमः ॥ ९ ॥

प्रश्न लग्न चर हो और चर राशि में सूर्य स्थित हो और द्विस्वभाव में चन्द्रमा वर्त्तमान हो तो क्षेम-सुख की सिद्धि, पुत्र की वृद्धि-धनागम करेंगे ॥ ९ ॥

स्थिरलग्ने द्विस्वभावे शशी सूर्यो यदा भवेत्।
जयप्राप्तिं समाप्नोति सिद्धिः सौख्यं शुभं भवेत् ॥ १० ॥

प्रश्न लग्न स्थिर हो और द्विस्वभाव में चन्द्रमा प्राप्त हो और सूर्य भी द्विस्वभाव में हो तो जय की प्राप्ति और सम्यक् प्राप्ति हो—सब कार्य की सिद्धि सुख और कल्याण की प्राप्ति हो ॥ १० ॥

स्थिरलग्ने द्विस्वभे सूर्ये चरे चन्द्रः प्रवर्त्तते ।
क्लेशः शरीरचिन्ता च धनहानिस्तु निश्चितम् ॥ ११ ॥

प्रश्न लग्न स्थिर हो और द्विस्वभाव में सूर्य हो और चर में चन्द्रमा स्थित हो तो शरीर में क्लेश हो, चिन्ता हो और धन की हानि निश्चय हो ॥ ११ ॥

स्थिरलग्ने चरे सूर्ये स्थिरे चन्द्रो भवेत्तदा ।
मित्रबन्धुविनाशं च न स्त्रीसौख्यं न चात्मनः ॥ १२ ॥

जो प्रश्न लग्न स्थिर हो और चर लग्न में सूर्य वर्त्तमान हो और चन्द्रमा स्थिर में हो तो मित्र-बन्धु का विनाश हो और न तो स्त्री को और न तो अपने शरीर को सुख हो ॥ १२ ॥

स्थिरलग्ने चरे सूर्ये द्विस्वभावे निशाकरः ।
सर्वसौख्यं महासिद्धिर्लाभसौख्यं धनागमः ॥ १३ ॥

जो प्रश्न लग्न स्थिर हो और चर राशि में सूर्य हो, द्विस्वभाव में चन्द्रमा हो तो सर्व कार्य का सुख, महासिद्धि, लाभ का सौख्य, धनागम हो ॥ १३ ॥

स्थिरलग्ने चरे सूर्ये चन्द्रमाः स्थिर एव च ।
सर्वकार्ये भवेत् सिद्धिर्धनः-धर्मप्रवर्द्धनम् ॥ १४ ॥

जो प्रश्न लग्न स्थिर हो और चर राशि में सूर्य प्राप्त हो और चन्द्रमा भी स्थिर ही में हो तो सर्व कार्य की सिद्धि और धन-धर्म की वृद्धि हो ॥ १४ ॥

स्थिरलग्ने द्विस्वभे सूर्ये स्थिरे चन्द्रः प्रवर्त्तते ।
राज्यप्राप्तिर्धनप्राप्तिः सर्वसौख्यं जयङ्करः ॥ १५ ॥

जो प्रश्न लग्न स्थिर हो, द्विस्वभाव में सूर्य स्थित हो और चन्द्रमा भी स्थिर ही में वर्त्तमान हो तो राज्य की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, सर्वविषयक सुख और जय को देनेवाला हो ॥ १५ ॥

स्थिरलग्ने स्थिरे सूर्ये द्विस्वभावे निशापतिः ।
चतुष्पदानां हानिः स्याद् व्याधिक्लेशं ध्रुवं भवेत् ॥ १६ ॥

प्रश्न लग्न स्थिर हो और स्थिर में सूर्य स्थित हो और द्विस्वभाव में चन्द्रमा हो तो चतुष्पादों की हानि, व्याधि और क्लेश निश्चय कहना ॥ १६ ॥

द्विस्वभावे च लग्ने च द्विस्वभेऽर्के चरे शशी ।
भूलाभः स्थानलाभश्च स्वजनैः सह संपदः ॥ १७ ॥

जो प्रश्न लग्न द्विस्वभाव हो और द्विस्वभाव ही में सूर्य हो और चर राशि में चन्द्रमा हो तो पृथ्वी का लाभ, स्थान का लाभ स्वजनों से सम्पत्ति हो ॥१७॥

द्विस्वभावे यदा लग्नं चरेऽर्के द्विस्वभे शशी ।
सुतलाभो मनस्तुष्टिर्विद्यालाभो धनागमः ॥ १८ ॥

यदि लग्न द्विस्वभाव हो और चर राशि में सूर्य हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो पुत्रलाभ, मन को प्रसन्नता, विद्यालाभ और धनप्राप्ति हो ॥ १८ ॥

द्विस्वभावेषु लग्नेषु सूर्यो वा स्थिरराशिषु ।
द्विस्वभावे मृगांकश्चेत् पुत्रनाशो भवेद्ध्रुवम् ॥ १९ ॥

जो लग्न द्विस्वभाव हो और सूर्य स्थिर राशि का हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव का हो तो पुत्र का नाश निश्चित हो ॥ १९ ॥

द्विस्वभावेषु लग्नेषु चन्द्रसूर्यौ चरस्थिरौ ।
लाभयोगं विजानीयान्मनः सिद्धिः सदा सुखम् ॥ २० ॥

जो लग्न प्रश्नकाल में द्विस्वभाव का हो, और चन्द्रमा-सूर्य क्रमशः चर राशि स्थिर राशि में हो तो लाभ का योग जानना चाहिए और मनोकामना की सिद्धि हो और हमेशा सुख प्राप्त हो ॥ २० ॥

द्विस्वभावं यदा लग्नं चरेऽर्कः स्थिरचन्द्रमाः ।
महालाभं महासौख्यं यशःसौभाग्यसम्पदः ॥ २१ ॥

प्रश्न लग्न द्विस्वभाव का हो और सूर्य चर राशि का हो और चन्द्रमा स्थिर राशि का हो तो महालाभ, महासौख्य, यश, सौभाग्य, धन, सम्पत्ति हो ॥२१॥

द्विस्वभावं यदा लग्नं स्थिरं वा रविचन्द्रमाः ।
सर्वसौख्यं विजानीयाल्लाभयोगो महाफलम् ॥ २२ ॥

यदि प्रश्नकालीन लग्न द्विस्वभाव हो और सूर्य-चन्द्रमा दोनों स्थिर राशि में प्राप्त हों तो सर्व विषयक सुख जानना—लाभ का योग और अत्यन्त फलकारी हो ॥ २२ ॥

द्विस्वभावे यदा लग्ने द्विस्वभावे शशी रविः ।
अशुभ शकुनं चैव हानिरुद्वेगकारकम् ॥ २३ ॥

यदि प्रश्न का लग्न द्विस्वभाव हो और द्विस्वभाव में सूर्य-चन्द्रमा भी प्राप्त हो तो शकुन अशुभकारक होगा और हानि तथा उद्वेगकारक होगा ॥ २३ ॥

द्विस्वभावं यदा लग्नं स्थिरेऽर्के च निशाकरे ।
पान्थस्यागमनं शीघ्रं सर्वसौख्यं जयङ्करः ॥ २४ ॥

यदि प्रश्न लग्न द्विस्वभाव हो और स्थिर राशि में सूर्य-चन्द्रमा दोनों प्राप्त हों तो पथिक का आगमन शीघ्र करे और सर्व सौख्य, जयकारक हो ॥ २४ ॥

अथ द्वितीयं प्रकरणम्

अथ केरलीप्रश्नः

केरलीपञ्चचक्रम्

१०	२०	३०	४०	५०
१	२	३	४	५

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॐ सिद्धिः ॥ इति मंत्रेण त्रिवारमभिमंत्र्य पूगीफलं पृच्छकहस्ते दत्वा पञ्चाविति वदेत् ॥ भो पृच्छक पूगीफलं पञ्चकानां मध्ये क्षेप्यं पुनर्द्वितीयपञ्चके क्षिप्यताम् उभयोरंकयोर्मेलने कृते यदि,११ तदा वदेत् भो पृच्छक तव वांछितफलं भविष्यति न संदेहः स्थानान्तरे ततो विदेशे कार्यं कृत्वा समागमिष्यसि गमने कृषिवाणिज्यादिगुर्विणीरोगिप्रश्नादौ सिद्धिर्वाच्या ॥१॥

जिस समय प्रश्नकर्त्ता मनुष्य आकर प्रश्न करे उस समय एक पूगीफल उपर्युक्त मंत्र से अभिमंत्रण करके अर्थात् फूंक के पूछने वाले के हाथ में देकर पीछे यह कहे कि इस पूगीफल को पहिले पाँच कोठों में से किसी कोठे में रखो फिर दूसरे पाँचों कोठों में भी इसी तरह रखाये अनन्तर दोनों कोठों के अंक को मिलाये अर्थात् पहिले पाँचों में से जिस कोठे में सुपारी उसने धरी हो उसका अंक और दूसरी बार नीचे पाँचों में से जिस कोठे में धरी हो उस कोठे का अंक मिलाने से ग्यारह हो तो कहे कि, हे पृच्छक ! तुम्हारा मनोरथ सफल होगा निःसन्देह, परन्तु दूसरे स्थान में तदनन्तर विदेश में कार्य करके आगमन होगा। गमन प्रश्न में, कृषि-वाणिज्य वगैरह गुर्विणी-रोगी प्रश्नादि में ११ इस अंक के आने पर सर्वत्र सिद्धि कहना ॥ १ ॥

यद्यंकमेलने १२ तदा देवकार्यं कुरु विलंबात्कार्यसिद्धिः ॥ २ ॥

यदि १३ तदा वदेत् तव कार्ये बहवो विघ्नाः सन्ति अन्यच्चिन्तय ॥ ३ ॥

यदि १४ तदा वदेत् त्वया यन्मनसि चिन्तितं तत्सर्वं भविष्यति नात्र संदेहः सर्वत्र वृद्धिः ॥ ४ ॥

यदि १५ तदाभीष्टसिद्धिः, संदेहं माकुरु, सोत्साहो भव ॥ ५ ॥

यद्यंकमेलने २१ तदा तव कार्ये कापि चिन्तोत्पन्ना द्वेधा कार्ये मतिर्जाता तां दूरीकुरु कार्यं भविष्यति जीववृद्धिः ॥ ६ ॥

जो दोनों कोष्टों के अंक मिलाने से १२ बारह हो तो प्रश्नकर्त्ता से कहे कि देवतासम्बन्धी कार्य पूजन वगैरह करो, विलंब से कार्य की सिद्धि होगी ॥ २ ॥

जो दोनों कोष्टों के अंक मिलाने से १३ अंक हो तो प्रश्नकर्त्ता से कहे कि तुम्हारे कार्य में बहुत से विघ्न हैं दूसरे की चिन्ता करो ॥ ३ ॥

जो दोनों अंक के संयोग करने से १४ हो तो प्रश्नकर्त्ता से कहे जो तुमने मन में विचारा है वह सब निःसन्देह होगा जो जो प्रश्न करे सर्वत्र वृद्धि कहना ॥ ४ ।

जो अंक १५ हो तो कहना कि तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होगा। सन्देह मत करो, चित्त में उत्साह करो ॥ ५ ॥

जो दोनों के अंक मिलाने से २१ हो तो कहना कि तुम्हारे कार्य में कोई चिन्ता उत्पन्न हुई है अर्थ में दो तरह की जो बुद्धि हुई है उसे दूर करो कार्य होगा, जीव की वृद्धि होगी ॥ ६ ॥

यदि २२ तदा स्वबाहुबलात् कार्यसिद्धिः। कश्चित्पुरुषः स्त्री वा कार्यं प्रतिबध्नाति तं निर्जित्य कार्यं भविष्यति तस्य हानिः ॥ ७ ॥

यदि २३ तदा कार्यं सविघ्नं प्रश्नो न शोभनः ॥ ८ ॥

यदि २४ सर्वकार्येषु मंगलं गमनागमनसेवायां जीवने मरणे तथा व्यापारादिषु कार्येषु सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥ ९ ॥

यदि २५ तदा तव मनोरथा अत्युच्चाः सिद्धिर्भविष्यति अन्येषां विश्वासं मा कुरु स्वबाहुबलात् कार्यसिद्धिः ॥ १० ॥

यद्यंकमेलने ३१ तदा यच्चिन्तितं तद्भविष्यति सर्वकार्ये सिद्धिः व्यापारे लाभः ॥ ११ ॥

जो दोनों अंक के संयोग से २२ हो तो कहे कि अपने बाहुबल से कार्य की सिद्धि होगी और कोई पुरुष या स्त्री सभी कार्य में विघ्न करता है उसको जीत करके कार्य होगा। उसकी हानि होगी ॥ ७ ॥

जो दोनों मिलाने से अंक २३ हो तो कहना कि इस कार्य में विघ्न है यह प्रश्न अच्छा नहीं है ॥ ८ ॥

जो मिलाये हुए अंक २४ हों तो सब कार्य में मंगल होगा। जाने में, आने में, सेवा में, जीवन-मरण में और व्यापारादिक कार्य में सिद्धि होगी ॥ ९ ॥

जो २५ हो तो कहना कि तुम्हारे मनोरथ बहुत बड़े हैं सिद्धि होगी औरों का विश्वास मत करो, अपने बाहुबल से कार्य करो ॥ १० ॥

जो अंक मिलाने से ३१ हो तो कहना कि जो विचारा है सो होगा, सर्व कार्य में सिद्धि और व्यापार में लाभ होगा ॥ ११ ॥

यदि ३२ तदा कार्यं विनष्टं परन्तु सकलं भविष्यति ॥ १२ ॥

यदि ३३ एतत् प्रश्ने भव्यं न दृश्यते कार्यं मा कुरु ॥ १३ ॥

यदि ३४ यत् किंचित्करोषि उद्विग्नमते शृणु तव कार्यं भविष्यति उद्यमपरो भव ॥ १४ ॥

यदि ३५ अस्मिन् प्रयाणे उद्यमे अन्यत्प्रारम्भे जयेः ॥ १५ ॥

यद्यंकमेलने ४१ तव कार्यं भविष्यति नात्र सन्देहः ॥ १६ ॥

यदि ४२ उद्यमपरो भव कार्ये स्वयमेव ध्रुवं सिद्धिः ॥ १७ ॥

यदि ४३ सिद्धिः सर्वत्र लभ्यते ॥ १८ ॥

जो अंक संयोग करने से ३२ हों तो कार्य का नाश कहना परन्तु पीछे से सकल कार्य की सिद्धि होगी ऐसा कहना ॥ १२ ॥

जो ३३ हो तो कहना कि इस प्रश्न में कल्याण नहीं देखते हैं इससे यह काम मत करो ॥ १३ ॥

जो ३४ हो तो कहे कि हे उद्विग्न चित्तवाले सुनो, जो कुछ करोगे वह सब तुम्हारा कार्य होगा, उद्यम करो ॥ १४ ॥

यदि अंक मिलाने से ३५ हो तो कहना कि इस यात्रा में और उद्यम में कार्य-सिद्धि नहीं होगी दूसरी बार प्रारम्भ करने से जय होगा ॥ १५ ॥

अंक मिलाने से ४१ हो तो कहना कि तुम्हारा कार्य होगा इसमें सन्देह नहीं ॥ १६ ॥

जो अंक ४२ हो तो कहिये उद्यम करो, कार्य को स्वयं करने से निश्चय सिद्ध होगा ॥ १७ ॥

जो अंक ४३ हो तो कहे कि तुम्हारे सब कार्य में सिद्धि देखते हैं कार्य होंगे ॥ १८ ॥

यदि ४४ स्वल्पायासेन कार्यसिद्धिः पश्चिमोत्तरतः ॥ १९ ॥
यदि ४५ कार्येषु महत्त्वम् अन्यहस्तगतं वर्तते ॥ २० ॥
यद्यंकमेलने ५१ तदा कार्यसिद्धिः सर्वत्र शुभम् ॥ २१ ॥
यदि ५२ वाञ्छासिद्धिः ॥ २२ ॥
यदि ५३ तव कार्यं गोप्यं कुरु भाग्यदिवसाः समागताः सिद्धिः ॥ २३ ॥
यदि ५४ अस्मिन् कार्ये विरोधिनो दृश्यन्ते किंचित्कालं स्थित्वा कार्यं कुरु कार्यसिद्धिः ॥ २४ ॥
यदि ५५ तव कार्यं शोभनं सर्वत्र सिद्धिः ॥ २५ ॥

जो ४४ हो तो कहना कि थोड़े परिश्रम से कार्य होगा, पश्चिम-उत्तर दिशा से ॥ १९ ॥

जो अंक ४५ हो तो कहना कि तुम्हारा कार्य बहुत बड़ा है, दूसरे के हाथ में है ॥ २० ॥

जो अंक मिलान करने से ५१ हो तो कार्य की सिद्धि, सब जगह कल्याण कहना ॥ २१ ॥

जो अंक मिलाने से ५२ हो तो कहे कि तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा ॥२२॥

जो अंक मिलाने से ५३ हो तो कहना कि तुम कार्य को गोपन करो, अर्थात् 'छपाओ तुम्हारे भाग्य उदय के दिन आ गये, सब की सिद्धि होगी ॥ २३ ॥

जो संयोग करने से अंक ५४ हो तो कहना कि तुम्हारे कार्य में बहुत विरोधी देख पड़ते हैं, इससे कुछ काल ठहर के कार्य करो, कार्य की सिद्धि होगी ॥ २४ ॥

जो अंक संयोग करने पर ५५ हो तो कहना कि तुम्हारा कार्य बहुत अच्छा है, सब में सिद्धि होगी ॥ २५ ॥

अथ तृतीयं प्रकरणम्

अथ बीजप्रश्नः

बीजप्रश्नचक्रम्

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	ओ
अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ
ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
न	प	फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	श	स	ह	क्ष
			ष			

अकारे विजयं विद्याद्धनप्राप्तिस्तथैव च ।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि पुत्रलाभस्तथा ध्रुवम् ।। १ ।।
आकारे शोकसंतापो विरोधः सर्वजन्तुषु ।
आवर्तसंभवो व्याधिर्दुःखं चैव न संशयः ।। २ ।।

जिस समय मनुष्य कोई शकुन कराने के निमित्त आवे तो उसके हस्त से पूगीफलादिक कोई शुभ द्रव्य इन अकारादिक वर्णों पर स्थापन करावे अर्थात् उससे कहे कि तुम इन कोठों में से किसी कोठे के अक्षर पर धरो-वह अपनी इच्छा से जिस वर्ण पर स्थापन करे तो अकारादिक के क्रम से उसका शुभाशुभ फल कहे । प्रश्नाक्षर जो अकार हो तो विजय, धन की प्राप्ति जानना सर्व कार्य की सिद्धि, पुत्र का लाभ निश्चय करके हो ।। १ ।।

आकाराक्षर में धरे तो शोक-सम्यक् ताप, सब प्राणियों से विरोध आवर्त्त-जन्य रोग, क्लेश कहना ॥ २ ॥

इकारे परमं सौख्यं सिद्धिश्चैव प्रजायते ।
नश्यन्ति सर्वदुःखानि धनं धान्यं प्रजायते । ३ ॥
ईकारे पुत्रलाभश्च धनलाभस्तथैव च ।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि सौभाग्यमतुलं भवेत् ॥ ४ ॥
उकारे शोकसंतापो वियोगश्च भवेद् ध्रुवम् ।
दुःखं चैव भवेद्घोरमापच्चैव न संशयः ॥ ५ ॥
ऊकारे लभ्यते स्थानं प्रतिष्ठा चैव शोभना ।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि यच्चिन्तयति तद्भवेत् ॥ ६ ॥
ऋकारे प्रीतिरतुला स्वर्णलाभश्च नित्यशः ।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि लाभश्चात्र न संशयः ॥ ७ ॥

इकार मे परम सुख, सर्व कार्यों की सिद्धि, सर्व दुःखों का नाश, धन-धान्य की वृद्धि कहना ॥ ३ ॥

ईकार में धन, पुत्र का लाभ, सर्व कार्योंकी सिद्धि सौभाग्य अत्यंत हो ॥४॥

उकाराक्षर में शोक सम्यक्ताप चित्त में निश्चय कर के वियोग हो और बड़ा दुःख हो निःसंदेह विपत्ति हो ॥ ५ ॥

ऊकार में स्थान का लाभ हो, अच्छी प्रतिष्ठा सर्व कार्यों की सिद्धि और जो-जो चित्त में चिन्तन करे सो हो ॥ ६ ॥

ऋकार मे अत्यन्त प्रीति, स्वर्ण का नित्य ही लाभ, सर्व कार्य सिद्ध हो, लाभ निःसंदेह हो ॥ ७ ॥

ॠकारे जायते व्याधिर्दुःखसंताप एव च ।
मित्रैः सह विरोधश्च जायते नात्र संशयः ॥ ८ ॥
ऌकारे लभते सिद्धिं मित्रैः सह समागमम् ।
आरोग्यं जायते नित्यं राजसन्मानमेव च ॥ ९ ॥
ॡकारे दृश्यते हानिर्व्याधिश्चैव भविष्यति ।
संपत्तिहरणं नित्यं कार्यहानिर्न संशयः ॥ १० ॥
एकारे दृश्यते सिद्धिर्मित्रैः सह समागमः ।
ततश्च लभते स्थानं सुखं चैव न संशयः ॥ ११ ॥

ऐकारे बन्धनं मित्रैर्विरोधश्च भविष्यति ।
विग्रहश्च भवेन्नूनं मृत्युश्चैत्र न संशयः ॥ १२ ॥
ओकारे दृश्यते सिद्धिर्दुःखशोकविनाशनम् ।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि निर्भयं च न संशयः ॥ १३ ॥

ॠकार में व्याधि की उत्पत्ति, दुःख, सन्ताप हो और मित्रों के साथ विरोध निःसंदेह उत्पन्न हो ॥ ८ ॥

लृकार में सब कार्य की सिद्धि, मित्रों के समागम, शरीर में आरोग्य से राजकृत सन्मान हो ॥ ९ ॥

ॡकार में सर्वविषयक हानि, रोग की उत्पत्ति, सम्पत्ति का हरण, कार्य की हानि निःसंदेह हो ॥ १० ॥

एकार में कार्य की सिद्धि, मित्रों के साथ समागम हो, स्थान का लाभ, शरीर में सुख और कल्याण हो ॥ ११ ॥

ऐकार में बन्धन, मित्रों के साथ विरोध, औरों से भी विग्रह, निःसंदेह मृत्यु वा मृत्यु समान कष्ट हो ॥ १२ ॥

ओ-कार में सिद्धि का दर्शन, दुःख, शोक का विनाश, सर्वकार्य सिद्ध हो और भय न हो, इसमें संशय नहीं ॥ १३ ॥

औ-कारे सर्वकार्याणि नैव सिध्यन्ति सर्वदा ।
मित्रैः सह विरोधश्च शोकसंताप एव च ॥ १४ ॥
अं-कारे च महाहानिर्बन्धनं च भविष्यति ।
महादुःखं महाक्लेशो भयं चैव न संशयः ॥ १५ ॥
अः-कारे लभते सिद्धिं प्रतिष्ठां चैव शोभनाम् ।
पुत्रलाभो महासौख्यं जायते नात्र संशयः ॥ १६ ॥
क-कारे राजसन्मानं सर्वार्थप्रियदर्शनम् ।
कल्याणं च भवेन्नूनं सिद्धिश्चैव न संशयः ॥ १७ ॥
ख-कारे शोकसंतापो द्रव्यनाशस्तथैव च ।
शरीरे च ज्वरव्याधिर्जायते नात्र संशयः ॥ १८ ॥
ग-कारे चिंतितं कार्यं सिद्धिश्चैव प्रजायते ।
सुसौभाग्यमवाप्नोति मित्रैः सह समागमः ॥ १९ ॥

औ-काराक्षर में सर्वकार्य की सिद्धि न हो, मित्रों के साथ विरोध और शोक-संताप हो ॥ १४ ॥

जो शकुनाक्षर अं-कार हो तो महाहानि, बंधन, महादुःख, क्लेश, भय, निःसन्देह हो ।। १५ ।।

प्रश्न में अः-अक्षर हो तो कार्य की सिद्धि-प्रतिष्ठा-पुत्र का लाभ-महासुख निःसन्देह प्राप्त हो ।। १६ ।।

क-कार में राजकृत सन्मान व अर्थ की सिद्धि-प्रिय का समागम और कल्याण निश्चय करके हो ।। १७ ।।

ख-काराक्षर में शोक:सन्ताप और द्रव्य का नाश-शरीर में ज्वरजनित व्याधि निःसंदेह हो ।। १८ ।।

ग-काराक्षर में जो कार्य विचारे उसकी सिद्धि हो-सौभाग्य की प्राप्ति-मित्रों के साथ समागम होगा ।। १९ ।।

घ-कारे कार्यसिद्धिं च लभते प्रियदर्शनम् ।
सौभाग्यं च भवेत्सम्यक् कल्याणं च प्रजायते ।। २० ।।
ङ-कारे कार्यनाशश्च सिद्धिर्भवति निष्फला ।
अर्थनाशो विपत्तिश्च निष्फलं कार्यमेव च ।। २१ ।।
च-कारे विजयः कार्ये राजसन्मानमेव च ।
लाभं चैव सदार्थस्य जाय नात्र संशयः ।। २२ ।।
छ-कारे सर्वकार्याणि रत्नानि विविधानि च ।
आरोग्यं क्षेममानन्दं सौभाग्यमतुलं भवेत् ।। २३ ।।
ज-कारे द्रव्यहानिः स्यात्कार्यं चैव विनश्यति ।
मित्रैः सह विरोधश्च कलहं लभते नरः ।। २४ ।।
झ-कारे स्वर्थलाभश्च रत्नानि विविधानि च ।
सौभाग्यमर्थप्राप्तिश्च कार्यं च सफलं भवेत् ।। २५ ।।

घ-काराक्षर मे सर्व कार्य की सिद्धि, प्रिय, समागम का लाभ भली-भाँति-सौभाग्य और कल्याण हो ।। २० ।।

ङ—कार में कार्य का नाश, सिद्धि की निष्फलता, अर्थ का नाश-विपत्ति-सर्वकर्म निष्फल हो ।। २१ ।।

च—काराक्षर में सर्व कार्य के विषय में विजय हो-राजकृत सन्मान, सदा द्रव्य का लाभ निःसंदेह प्राप्त हो ।। २२ ।।

छ—काराक्षर हो तो सर्व कार्य हो, अनेक तरह के रत्न मिलें-शरीर में आरोग्यता रहे, कुशल, आनन्द और सौभाग्य का अतुल लाभ हो ।। २३ ।।

ज—काराक्षर हो तो द्रव्य की हानि—कार्य का विनाश हो—मित्रों के साथ विरोध और झगड़ा हो ॥ २४ ॥

झ—कार में द्रव्य का और अनेक रत्नों का लाभ—सौभाग्य की सफलता हो।

ञ–कारे शोकसंतापो बन्धनं च भविष्यति।
इष्टैः सह विरोधश्च मृत्युश्चैव न संशयः ॥ २६ ॥
ट–कारे दृश्यते लाभो विजयश्च भविष्यति।
प्राप्नोति सफलं कार्य नूनं सर्वार्थसाधनम् ॥ २७ ॥
ठ–कारे सर्वसिद्धिश्च धनं धान्यं तथैव च।
आरोग्यं सफलं कार्यं जायते नात्र संशयः ॥ २८ ॥
ड–कारे लभते सिद्धिं वर्द्धमानां तथैव च।
सत्यं च क्षेममारोग्यं लभते नात्र संशयः ॥ २९ ॥
ढ–कारे बन्धनं व्याधिः शोकसंताप एव च।
मनसा चिन्तितं यद्यत्तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ३० ॥
ण–कारे सकला विद्या सौभाग्यमतुलं भवेत्।
आरोग्यं च धनं धान्यं सर्वं चैव सदा भवेत् ॥ ३१ ॥

ञ–कार में चित्त में शोक—सम्यक् ताप हो, बन्धन, मित्रों के साथ विरोध और मृत्यु हो ॥ २६ ॥

ट–कार मे लाभ हो—विजय हो—कार्य सफल हो और निश्चय करके सर्व अर्थ का साधन हो ॥ २७ ॥

ठ–काराक्षर में सर्वसिद्धि, धन की और धान्य की सिद्धि, शरीर रोगरहित और निःसन्देह कार्य सफल हो ॥ २८ ॥

ड–काराक्षर में वृद्धि को प्राप्त हो। जो सिद्धि है वह मिले और कुशलपूर्वक शरीर में आरोग्यता निःसन्देह सत्य करके प्राप्त हो ॥ २९ ॥

ढ–काराक्षर में बन्धन और रोग-शोक, चित्त में ताप हो और मन में जो-जो विचारे सो सब व्यर्थ हो ॥ ३० ॥

ण—कार में सब विद्या, अतुल सौभाग्य हो, शरीर में आरोग्य, धन-धान्य सब हो ॥ ३१ ॥

त–कारे चार्थलाभश्च सौभाग्यमपि जायते।
अपरेण भवेत्सिद्धिः सर्वकामार्थसाधनम् ॥ ३२ ॥

थ-कारे अर्थहानिश्च स्थानविच्छेद एव च ।
अतिसम्भ्रमरोगश्च भवेदेवं न संशयः ॥ ३३ ॥
द-कारे धर्मलाभश्च सुखमारोग्यमेव च ।
मुक्तिश्चैव सुखं नित्यं लभते नात्र संशयः ॥ ३४ ॥
ध-कारे धनलाभश्च सुखमारोग्यमेव च ।
प्राप्नोति भाग्यमतुलं मानवो नात्र संशयः ॥ ३५ ॥
न-कारे भोगसम्प्राप्तिः सर्वलाभो भविष्यति ।
आरोग्यं सफलं कार्यं भवेदत्र न संशयः ॥ ३६ ॥

त-काराक्षर में अर्थ का लाभ निश्चय करके हो, सौभाग्य और दूसरे के द्वारा सब काम का अर्थसाधन हो ॥ ३२ ॥

थ-काराक्षर में अर्थ की हानि, स्थान का विच्छेद, विशेष कर के भ्रम रोग की उत्पत्ति हो ॥ ३३ ॥

द-काराक्षर में धन का लाभ, सुख शरीर में हो, निरोगता, अनेक प्रकार के भोग का सुख नित्य ही प्राप्त हो ॥ ३४ ॥

जो प्रश्नाकार ध-कार हो तो धन का लाभ शरीर में सुख, आरोग्यता हो, मनुष्य को निःसन्देह अतुल भाग्य अर्थात् बड़े ऐश्वर्य की प्राप्ति हो ॥ ३५ ॥

न-काराक्षर में अनेक भोग की प्राप्ति, सब वस्तु का लाभ, शरीर में आरोग्यता, कार्य की सफलता निःसन्देह हो ॥ ३६ ॥

प-कारे धननाशश्च व्याधिबन्धनमेव च ।
उद्वेगः कलहो नित्यं जायते नात्र संशयः ॥ ३७ ॥
फ-कारे धनसम्प्राप्तिः सर्वसम्पत्तथैव च ।
सर्वकार्याणि सिध्यन्ति नैरुज्यं लभते सुखम् ॥ ३८ ॥
ब-कारे बन्धनं नाशो भविष्यति नृणां ध्रुवम् ।
प्राप्नोति मरणं नित्यं व्याधिश्चैव विनिर्दिशेत् ॥ ३९ ॥
भ-कारे दृश्यते हानिर्लाभश्चैव भवेत्पुनः ।
पुत्रो मनोरथप्राप्तिर्भविष्यति न संशयः ॥ ४० ॥
म-कारे निधनं नूनमापदा परमा स्मृता ।
न च भोगो भवेत्तस्य सर्वं भवति निष्फलम् ॥ ४१ ॥
य-कारे चार्थमाप्नोति धनधान्यसमं फलम् ।
सुशोभनं भवेत्तस्य सर्वलाभो भविष्यति ॥ ४२ ॥

प–कारक्षर में धन का नाश, रोग और बन्धन हो। चित्त में उद्वेग, नित्य ही कलह निःसन्देह हो ॥ ३७ ॥

फ–कारक्षर में धन की और सब सम्पत्ति की प्राप्ति और सब कार्य की सिद्धि, शरीर में निरोगता, सुख लाभ हो ॥ ३८ ॥

ब–कारक्षर में बन्धन, धन का नाश और रोगी के प्रश्न में मरण में निश्च व्याधि कहना ॥ ३९ ॥

भ–कारक्षर में पहिले तो कार्य की हानि अनन्तर लाभ हो और पुत्र-प्राप्ति, मनोकामना की सिद्धि होती है इसमें संशय नहीं ॥ ४० ॥

म–कारक्षर में निश्चय करके मृत्यु, परम आपत्ति कहना, भोग की प्राप्ति न हो, सर्व कर्म निष्फल हो ॥ ४१ ॥

य–कारक्षर में अर्थ की प्राप्ति, धन-धान्य की सम प्राप्ति हो, शोभा हो, सर्व वस्तु का लाभ हो ॥ ४२ ॥

र–कारे सभयं कार्यं विरोधः स्वजनैः सह ।
नित्यं च जायते हानिर्मरणं दुःखमेव च ॥ ४३ ॥
ल–कारे धनसम्प्राप्तिर्लाभश्चापि भवेत्पुनः ।
विपुलं च महाभोग्यं लभते नात्र संशयः ॥ ४४ ॥
व–कारे कार्यनाशश्च धनहानिश्च जायते ।
दुःखं शोकं च सन्तापं महाभयमुपस्थितम् ॥ ४५ ॥
श–कारे कार्यसिद्धिश्च सफलं च दिने दिने ।
अर्थलाभो भवेन्नित्यं सर्वं कार्यं भविष्यति ॥ ४६ ॥
ष-कारे धन-धान्यं च सर्वं कार्यं च सिध्यति ।
कुशलं च सदा नूनं सर्वं तस्य शुभं भवेत् ॥ ४७ ॥

र–कारक्षर में भययुक्त कार्य और स्वजनों के साथ विरोध, निश्चय ही मरणदुःख हो ॥ ४३ ॥

ल–कारक्षर में धन की सम्यक् प्राप्ति और वस्तुओं का लाभ, विपुल अर्थात् बड़े भोग का लाभ निःसन्देह हो ॥ ४४ ॥

व–कारक्षर में कार्य का नाश, धन की हानि हो, दुःख-शोक, चित्त में खेद और महान् भय प्राप्त हो ॥ ४५ ॥

प्रश्नाक्षर शकार हो तो कार्य को सिद्धि, दिन-दिन सफल हो और अर्थ का लाभ, निश्चय ही सर्व कार्य हो ।। ४६ ।।

ष–काराक्षर में धन-धान्य की और सर्व कार्य की सिद्धि हो, निश्चय करके सदा कल्याण और सर्वदा शुभ हो ।। ४७ ।।

स-कारे निष्फलं नित्यं चिन्तां च लभते नरः ।
मनसा चिन्तितं कार्यं सर्वमेव विनश्यति ।। ४८ ।।
ह्–कारे च महासिद्धिः सर्वकार्यफलप्रदा ।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि नात्र कार्या विचारणा ।। ४९ ।।
क्ष–कारे राजसन्मान विद्यालाभस्तथैव च ।
स्थानं च शोभनं तस्य रुद्रवाक्ये न संशयः ।। ५० ।। इति

स–कार में सब कार्य निष्फल हो, अनेक चिन्ता मनुष्य को हो और मन में जो विचार करे वह सब नष्ट हो ।। ४८ ।।

ह्–कार में सब काम और फलों को देने वाली महासिद्धि हो, सब कार्य सिद्ध हो, इसमें कुछ विचार नहीं करना ।। ४९ ।।

क्ष–काराक्षर में राजसम्मान, विद्या का लाभ, स्थान का लाभ और कल्याण उसका हो, यह शिवजी का वाक्य है। इसमें सन्देह नहीं करना ।। ५० ।।

इति बीजप्रश्नः ।

——:o:——

अथ चतुर्थं प्रकरणम्

अथ ध्वजादिसर्वोपयोगि-प्रश्नफलम्

आयचक्रम्

सू	मं	शु	बु	बृ	श	चं	रा	इति वर्गग्रहाः
अ	क	च	ट	त	प	य	श	इति वर्गवर्णाः
ग	मा	सि	स्वा	ना	मृ	मृ	मे	इति वर्गदेवता
ध्वज १	धूम्र २	सिंह ३	श्वान ४	वृष ५	[illegible] ६	गज ७	ध्वांक्ष ८	आयाः ध्वजादयः

भूत-भावे-वर्तमानप्रश्नज्ञानं ज्योतिष्कृतम् ।
आयप्रश्नममुं ग्रन्थं चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥

उच्चारितफलनामाद्यक्षरवशतो ज्ञात्वा अकारादिवर्गैः कोष्ठानि पूरयित्वा ध्वजादयोऽष्टायाः कल्पनीयाः । ते यथा—

ध्वजो धूम्रश्च सिंहश्च श्वानो वृषखरौ गजः ।
ध्वांक्षस्त्वायाष्टकं ज्ञेयं शुभाशुभमिदं स्फुटम् ॥ २ ॥

यह जो आय नामक प्रश्न ग्रन्थ है, सो बहुत चमत्कार करने वाला और भूत अर्थात् हुआ, भावी अर्थात् होने वाला, वर्त्तमान जो कि बीत रहा है । ऐसे प्रश्नों का ज्ञान जिससे होता है ? जो प्रश्नकर्त्ता मुख से वर्ण उच्चारण करे या किसी फल का नाम ग्रहण कराये । पहले अक्षर से अकारादिक जो आठ वर्ग हैं उन कोष्ठों की पूर्त्ति करे और उन वर्गों पर से ध्वजादिक जो आठ आय हैं उनकी भी कल्पना करे, इसका मतलब यह है कि अकारादिक वर्गों में जो वर्ण पहिले उच्चारित हुआ है उसको प्रथम कोष्ठ में स्थापन करे । उसी क्रम से ध्वजादिकों में जो उस वर्ग का स्वामी हो उसको आदिक्रम से स्थापन करे । इस प्रकार आय लिखते हैं, ध्वज, धूम्र, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज, ध्वांक्ष ये आठ आय हैं, इनके द्वारा शुभ-अशुभ फल प्रत्यक्ष कहना ॥ १–२ ॥

अथ ध्वजादि-स्वामिनः

ध्वजे सूर्यश्च विज्ञेयो धूम्रे भौमस्तथैव च ।
सिंहे शुक्रश्च विज्ञेयः श्वाने सौम्यस्तथैव च ॥ ३ ॥
वृषे गुरुश्च विज्ञेयः खरे सूर्यसुतस्तथा ।
गजे ध्वांक्षे चन्द्रराहू एते च पतयः स्मृताः ॥ ४ ॥

आयों के स्वामी—ध्वज के स्वामी सूर्य, धूम्र के मंगल हैं। सिंह के अधि॰ शुक्र को जानना, श्वान के बुध हैं ॥ ३ ॥

वृष के स्वामी बृहस्पति को जानना। खर के स्वामी शनैश्चर हैं। गज के चन्द्रमा स्वामी हैं, ध्वांक्ष के राहु ये सब इनके स्वामी हैं ॥ ४ ॥

अथास्ति-नास्ति-प्रश्नः

ध्वजकुञ्जरसिंहेषु वृषे चास्ति विनिश्चितम् ॥ ५ ॥

तदनन्तर है या नहीं है इसका विचार—ध्वज, कुञ्जर, सिंह और वृष ये प्रश्न में आवें तो कहना है कि इनमे भिन्न जो चार हैं वे आवें तो कहना कि नहीं हैं। इनका प्रयोजन गुर्विणी आदि के प्रश्न में अस्ति-नास्ति का विचार करना है ॥ ५ ॥

अथ लाभाऽलाभप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे शीघ्रं लाभो भवेद् ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नाशश्च कलहप्रदः ॥ ६ ॥

इसके अनन्तर लाभालाभ का प्रश्न कहते हैं। ध्वज, गज, वृष, सिंह ये आय प्रश्न के समय आवें तो शीघ्र ही निश्चय करके लाभ करे, ध्वांक्ष, श्वान, खर और धूम्र में लाभ का नाश और कलह कहना ॥ ६ ॥

अथ नष्ट-लाभालाभप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे गतलाभो भवेद् ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने हानिर्भवति निश्चितम् ॥ ७ ॥
ध्वजे च ब्राह्मणश्चौरो धूम्रे क्षत्रिय एव च ।
सिंहे वैश्यश्च विज्ञेयः खरे च सेवकस्तथा ॥ ८ ॥
गजे दासी च विज्ञेया ध्वांक्षे च नायकस्तथा ।
वृषे श्वाने तथा ज्ञेयश्चौरश्चान्त्यजसंभवः ॥ ९ ॥

इसके अनन्तर गई हुई चीज मिलने न मिलने का प्रश्न—ध्वज में गज में और वृष-सिंह में गई चीज का निश्चय करके लाभ कहना और ध्वांक्ष-धूम्र-खर श्वान में निश्चय से हानि अर्थात् अलाभ कहना ॥ ७ ॥

नष्ट वस्तु अथात् खो गई वा चोरी हो गई चीज किस जाति ने लिया है उसको लिखते हैं। ध्वज में ब्राह्मण को चोर कहना, धूम्र में क्षत्रिय को, सिंह में वैश्य को, खर में सेवक को कहना ॥ ८ ॥

गज में दासी को, ध्वांक्ष में स्वामी को अर्थात् मालिक को चोर कहना, वृष में श्वान में अंत्यज अर्थात् शूद्र को चोर कहना ॥ ९ ॥

अथ दिक्षु नष्टवस्तुज्ञानम्

ध्वजे पूर्वगतं चैव धूम्र आग्नेय-दिग्गतम् ।
सिंहे च दक्षिणे चैव नैर्ऋते श्वान एव च ॥ १० ॥
पश्चिमे वृषभे ज्ञेयं वायव्यां खरभे तथा ।
उत्तरे कुञ्जरे द्रव्यमैशान्यां ध्वांक्षके तथा ॥ ११ ॥

इसके अनन्तर प्रश्न करने वाला पूछे कि किस दिशा में नष्ट वस्तु गई है, उसके जानने के लिये लिखते हैं—ध्वक्ष संज्ञक आय हो तो पूर्व दिशा में गत वस्तु कहना, धम्र हो तो अग्नि कोण में, सिंह में दक्षिण दिशा में जानना, 'श्वान' संज्ञक आय में नैर्ऋत्य कोण में कहना ॥ १० ॥

वृष संज्ञक आय में पश्चिम दिशा में कहना, खर में वायव्य कोण में कहना और कुञ्जर अर्थात् गज संज्ञक आय में उत्तर दिशा में द्रव्य कहना, ध्वांक्ष में ऐशान कोण में कहना ॥ ११ ॥

अथ नष्टस्य स्थानान्तरगतज्ञानम्

ऊषरे च ध्वजे नष्टं धूम्रे चाग्निगृहे तथा ।
गतं सिंहे तथाऽरण्ये श्वाने स्थानान्तरेऽपि च ॥ १२ ॥

इसके अनन्तर नष्ट वस्तु दूसरे स्थान में किस जगह पर है सो विचार लिखते हैं–ध्वज संज्ञक में ऊसर भूमि में नष्ट वस्तु कहना—धूम्र संज्ञक में अग्नि-गृह अर्थात् रसोई गृह में कहना, सिंह में गत वस्तु वन में रखा है—ऐसा कहना, श्वान में दूसरे के घर में रखा है ऐसा कहना ॥ १२ ॥

अथ प्रवासि-कुशलप्रश्नः

सिंहे वृषे ध्वजे चैव कुञ्जरे कुशलप्रदः।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति कुशलं वदेत् ॥ १३ ॥

इसके अनन्तर प्रवासी का कुशल प्रश्न लिखते हैं, प्रश्न के समय में सिंह-वृष-ध्वज-कुञ्जर हो तो परदेशी का कुशल कहना और ध्वांक्ष-श्वान-खर-धूम्र हो तो कुशल नहीं कहना ॥ १३ ॥

अथ प्रवासि-चरस्थिरप्रश्नः

ध्वजे गजे स्थिरश्चैव श्वाने सिंहे च चञ्चलः।
वृषे धूम्रे प्रयाणस्थं खरे ध्वांक्षे च कष्टकम् ॥ १४ ॥

तदनन्तर प्रवासी स्थिर है या चंचल है, इस प्रश्न का विचार लिखते हैं—ध्वज गज-प्रश्न समय में हो तो प्रवासी को उसी स्थान में 'स्थिर' कहना और श्वान-सिंह में हो तो चंचल कहना और वृष-धूम्र में प्रयाणार्थ अर्थात् चलने की तैयारी में और खर-ध्वांक्ष हो तो कष्ट कहना ॥ १४ ॥

अथ प्रवास्यागमनप्रश्नः

ध्वजे धूम्रे समीपस्थं दूरस्थं गजसिंहयोः।
वृषे खरे च मार्गस्थं ध्वांक्षे श्वाने पुनर्गतम् ॥ १५ ॥

तदनन्तर प्रवासी के गमन प्रश्न का विचार लिखते हैं—ध्वज और धूम्र में समीप में कहना और गज-सिंह में दूर कहना और वृष, खर में कहना कि मार्ग में अर्थात् राह में और ध्वांक्ष, श्वान में हो तो कहना कि कुछ दूर आकर पुनः फिर गया ॥ १५ ॥

अथ प्रवास्यागमनकालनिर्णयः

ध्वजे पक्षमिति प्रोक्तं धूम्रे सप्तदिनं तथा।
एकविंशश्च सिंहे च श्वाने मासं तथैव च ॥ १६ ॥
वृषे तु सार्द्धमासं च खरे मासद्वयं तथा।
गजे मासत्रयं प्रोक्तं ध्वांक्षे ह्यायनसम्मितम् ॥ १७ ॥

कब तक आवेंगे इसका काल नियम लिखते हैं—ध्वज आय में पक्ष १५ दिन में आने का काल कहना और धूम्र में ७ दिन और सिंह में २१ दिन कहना, श्वान में मास भर कहना ॥ १६ ॥

वृष में डेढ़ महीना और खर में दो महीना और गज में तीन महीना, ध्वांक्ष में अयन (छ महीना) कहना ।। १७ ।।

अथ धातु-जीव-मूलचिन्ता-प्रश्नः

ध्वजे धूम्रे धातुचिन्तां गजे सिंहे च मूलकम् ।
श्वाने खरे वृषे ध्वांक्षे जीवचिन्तां वदेद् बुधः ।। १८ ।।

इसके अनन्तर धातु-जीव-मूल का विचार लिखते हैं—जो प्रश्न समय में ध्वज और धूम्र हो तो कहना कि प्रश्नकर्ता को धातु की चिन्ता है और गज-सिंह हो तो मूल की चिन्ता कहना और श्वान-खर-वृष-ध्वांक्ष में प्रश्नकर्त्ता को जीव की चिन्ता पण्डित कहे ।। १८ ।।

अथ सुवर्णादिधातुविचारः

ध्वजे सुवर्णकं ज्ञेयं धूम्रे रौप्यं तथैव च ।
सिंहे ताम्रं च विज्ञेयं श्वाने लोहं तथैव च ।। १९ ।।
वृषे कांस्यं खरे नागं कथितं सीसकं गजे ।
ध्वांक्षे पित्तलकं ज्ञेयं कथितं गणकोत्तमैः ।। २० ।।
ध्वजे आभूषणं मूर्ध्नो धूम्रे तु मुखभूषणम् ।
कण्ठस्याभूषणं सिंहे श्वाने च कर्णयोरिदम् ।। २१ ।।
वृषे हस्तादिकं ज्ञेयमंगुलीभूषणं खरे ।
गजे च कटिसूत्रं च ध्वांक्षे पादादिगं तथा ।। २२ ।।

तदनन्तर धातु विचार लिखते हैं—ध्वज में सुवर्ण जानना, धूम्र में रजत कहना और सिंह में ताम्र जानना और श्वान में लोहा जानना ।। १९ ।।

वृष में कांस्य और खर में नाग अर्थात् रांगा जानना और गज में सीसा कहा है और ध्वांक्ष में पीतल जानना-ऐसा गणकोत्तम कहते हैं ।। २० ।।

धातु ज्ञान के अनन्तर भूषणादि का ज्ञान लिखते हैं—ध्वज आय में मस्तक का आभूषण अर्थात् गहना कहना-धूम्र में मुख का आभूषण कहना-सिंह आय में कंठ का भूषण, श्वान में कर्णों का भूषण कहना ।। २१ ।।

वृष में हाथ का भूषण, खर में अँगूठी, गज में कटिसूत्र अर्थात् करधनी, ध्वांक्ष में चरण आदि का भूषण कहना ।। २२ ।।

अथ मुष्टिप्रश्न:

ध्वजे पत्रं च विज्ञेयं धूम्रे पुष्पं प्रकीर्तितम् ।
सिंहे फलं च विज्ञेयं श्वाने काष्ठादिकं तथा ॥ २३ ॥
वृषे धान्यं तथा प्रोक्तं खरे तृणं निगद्यते ।
गजे बीजं च विज्ञेयं तुषं ध्वांक्षे तथा स्मृतम् ॥ २४ ॥

तदनन्तर मुष्टि प्रश्न लिखते है—ध्वज में किसी की पत्ती कहना—धूम्र में पुष्प कहना— सिंह में फल कहना, श्वान में कोई काष्ठ समझना ॥ २३ ॥

वृष में कोई अन्न कहना, खर में तृण कहना, गज में कोई बीज कहना, ध्वांक्ष में तुष अर्थात् भूसा किसी चीज का कहना ॥ २४ ॥

अथ मुष्टिवस्तुवर्णज्ञानम्

कुसुम्भं च ध्वजे ज्ञेयं धूम्रे श्वेतं तथैव च ।
लोहितांगं भवेत् सिंहे श्वाने पांडुरनीलकम् ॥ २५ ॥
पीतवर्णो वृषे ज्ञेयः खरे धूम्रश्च वर्णकः ।
गजे च श्यामवर्णं च ध्वांक्षे च मिश्रवर्णकम् ॥ २६ ॥

तदनन्तर मुष्टि में क्या वस्तु है इसे जानने के लिये लिखते हैं—ध्वज में कुसुंभ जानना, धूम्र में सफेद वस्तु कहना, सिंह में लाल वस्तु कहना, श्वान में पांडुर नकुल सदृश वा नील वर्ण कहना ॥ २५ ॥

वृष में पीत वर्णं जानना, खर में धूम्र वर्ण कहना, गज में श्याम वर्ण कहना, ध्वांक्ष में मिश्र वर्ण—मिला हुआ कहना ॥ २६ ॥

अथ कन्यापुत्रजन्मप्रश्न:

ध्वजे वृषे गजे सिंहे गुर्विणीपुत्रमादिशेत् ।
धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे कन्याजन्म विनिर्दिशेत् ॥ २७ ॥

तदनन्तर गर्भवती को कन्या वा पुत्र का जन्म होगा इसका विचार—ध्वज में वृष, गज और सिंह में गुर्विणी को पुत्र का जन्म कहना और धूम्र, श्वान, खर, ध्वांक्ष में पुत्री का जन्म कहना ॥ २७ ॥

अथ आयु:प्रमाणम्

ध्वजे सिंहे शतं प्रोक्तं गजे व्योमगजस्तथा ।
वृषे च षष्टिवर्षाणि खरे व्योमाब्धिसंज्ञकम् ॥ २८ ॥

आयु का प्रमाण—ध्वज-सिंह में शत १०० वर्ष का आयुर्बल कहना, गज में व्योम कहे—शून्य-गज-आठ (अस्सी वर्ष) का आयुर्बल कहना, वृष में साठ ६० वर्ष की आयु, खर में व्योमाब्धि अर्थात् चालीस ४० वर्ष का कहना ॥ २८ ॥

श्वाने च विंशतिः प्रोक्ता ध्वांक्षे च षोडशस्तथा ।
धूम्रे वर्षमिति ज्ञेयमित्यायुश्च विचिन्तयेत् ॥ २९ ॥

श्वान में बीस वर्ष की आयुर्बल कहना, ध्वांक्ष में १६ वर्ष का, धूम्र में एक वर्ष जानना, इस तरह आयुर्बल का विचार करना ॥ २९ ॥

अथ शत्रोरागमनप्रश्नः

उपश्रुतिः स्याद्भवतीति सत्या ध्वजे गजे सिंह—वृषे च प्राहुः ।
श्वाने खरे ध्वांक्ष-धूम्र एवमुपश्रुतिः स्याद्भवतीति मिथ्या ॥ ३० ॥

तदनन्तर शत्रु के आगमन की वार्त्ता सत्य वा मिथ्या है, इसका प्रश्न—ध्वज-गज-सिंह वृष में सुनी हुई शत्रु के आने की वार्त्ता सत्य कहना—ऐसा आचार्य कहते हैं और श्वान मे खर-ध्वांक्ष-धूम्र में शत्रु के आने की वार्त्ता मिथ्या कहना ॥ ३० ॥

अथ जय-पराजयप्रश्नः

गजे ध्वजे वृषे सिंहे स्थायिनो जयसम्भवः ।
खरे श्वाने तथा धूम्रे ध्वांक्षे तु यायिनो जयः ॥ ३१ ॥

इसके अनन्तर स्थायी के जीतने-हारने का प्रश्न—यदि प्रश्न में गज-ध्वज-वृष-सिंह आवे तो स्थायी का जय कहना (स्थायी वह है जो कि अपने देश में कोट इत्यादि बनवा के संग्राम करे) और उसी प्रकार खर में श्वान, धूम्र और ध्वांक्ष में यायी का जय कहना (यायी वह है जो कि दूसरे देश से चढ़ाई कर के आवे) और स्थायी-यायी के जय के विषय में जो गज, ध्वज इत्यादि आय कहे हैं उनसे भिन्न जो उनके विषय में आवे तो संधि अर्थात् मेल कहना। इसी प्रकार कोट ग्रामादि में विचार करना ॥ ३१ ॥

अथ वृष्टिप्रश्नः

धूम्रे वृषे गजे श्वाने वृष्टिर्भवति चोत्तमा ।
सिंहे ध्वजे विलम्बं च ध्वांक्षे खरे न सिद्ध्यति ॥ ३२ ॥

अनन्तर वृष्टि का प्रश्न—धूम्र-वृष-गज-श्वान में उत्तम वृष्टि कहना और सिंह-ध्वज में विलम्ब से, ध्वांक्ष-खर में वृष्टि नहीं कहना ।। ३२ ।।

अथ नक्षत्रगर्भविचार:

अश्विन्याद्यभमारभ्य नक्षत्रं दशकं तथा ।
तस्मात् पञ्चनक्षत्रं गर्भपातस्य चिन्तयेत् ।। ३३ ।।
गर्भपाते तथा वृष्टिर्हानिर्भवति निश्चिता ।
गर्भपृष्ठे तथा वृष्टिर्यथा भवति चोत्तमा ।। ३४ ।।

तदनन्तर प्रश्न-अश्विन्यादिनक्षत्रों से गर्भ का विचार करते हैं—अश्विन्यादि दश नक्षत्र गर्भ के पृष्ठ नक्षत्र हैं, जिसमें आगे पाँच नक्षत्र गर्भ नक्षत्र हैं, इनसे गर्भपात का विचार करना ।। ३३ ।।

गर्भपात के नक्षत्र-प्रश्न समय में आवे तो वृष्टि में हानि निश्चय कर के कहना और गर्भ के पृष्ठ जो दश नक्षत्र हैं वे आवें तो उत्तम वृष्टि कहना ।।३४।।

अथ दिनादिनप्रश्न:

धूम्रे सप्तदिनं प्रोक्तं वृषे दिग्भिस्तथैव च ।
श्वाने च विंशतिर्ज्ञेया गजे च सप्तविंशतिः ।। ३५ ।।
सिंहे ध्वजे च व्योमाब्धी खरे ध्वांक्षे ऋतुस्तथा ।
वर्षाकाले च विज्ञेयं कथितं गणकोत्तमैः ।। ३६ ।।

तदनन्तर दिन का नियम-वर्षा-प्रश्न में धूम्र आवे तो सात दिन में कहना और वृष में दश दिन, श्वान में बीस दिन, गज में सत्ताईस दिन ।। ३५ ।।

सिंह-ध्वज में चालीस दिन, खर-ध्वांक्ष में दो महीना । इस तरह वर्षा काल में काल जानना गणकोत्तमों ने कहा है ।। ३६ ।।

अथ स्त्रीलाभप्रश्न:

ध्वजे च सिंहे च वृषे च लाभः स्त्रियं सुरूपां लभते सुलीलाम् ।
श्वाने खरे ध्वांक्ष-गजे च धूम्रे कार्यस्य हानिः कलहस्तथैव ।। ३७ ।।

इसके अनन्तर (स्त्री-लाभ का प्रश्न-ध्वज-सिंह-वृष में सद्वृत्त-सदाचार युक्त स्वरूपवती-स्त्री का लाभ कहना और श्वान-खर-ध्वांक्ष गज धूम्र में कार्य की हानि और कलह कहना ।। ३७ ।।

अथ व्यवहारप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे व्यवहारः शुभावहः ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे कलहाद्यशुभप्रदः ॥ ३८ ॥

अनन्तर व्यवहार का प्रश्न— ध्वज–गज–वृष–सिंह में व्यवहारविषयक शुभ कहना और ध्वांक्ष–श्वान–खर–धूम्र में कलहादि–अशुभ कहना ॥ ३८ ॥

अथ नौकाप्रश्नः

ध्वज-कुंजर–सिंहेषु वृषे च कुशलप्रदः ।
ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने नौका मज्जयति ध्रुवम् ॥ ३९ ॥

तदनन्तर नौका का प्रश्न—ध्वज–कुञ्जर–सिंह–वृष इनमें नाव के विषय में कल्याण कहना और ध्वांक्ष–धूम्र–खर–श्वान में नाव जल में निश्चय डूब जाय ॥ ३९ ॥

अथ राज्यप्राप्तिप्रश्नः

गजे ध्वजे चिरं प्राप्तिर्वृषे सिंहे च शीघ्रता ।
श्वाने खरे न च प्राप्तिः शत्रुर्गृह्णाति सत्वरम् ॥ ४० ॥
ध्वांक्षे धूम्रे पदं नास्ति कलहो भ्रातृजैः सह ।
राजयोगविचारेषु कथितो गणकोत्तमैः ॥ ४१ ॥

तदनन्तर राज मिलने का प्रश्न—ध्वज–गज में चिरकाल में प्राप्ति कहना और वृष–सिंह में शीघ्र ही प्राप्ति कहना और श्वान–खर में प्राप्ति न हो प्रत्युत शीघ्र ही शत्रु ग्रहण कर ले ॥ ४० ॥

ध्वांक्ष–धूम्र में पद न हो–भाई के साथ झगड़ा हो। इस प्रकार राजयोग का विचार गणकोत्तम कहते हैं ॥ ४१ ॥

अथाऽधिकारप्राप्तिप्रश्नः

ध्वजे–गजे स्थिरं प्राप्तिर्वृषे सिंहे च शीघ्रतः ।
कलहश्च तथा श्वाने नास्ति च ध्वांक्ष-धूम्रयोः ॥ ४२ ॥

तदनन्तर अधिकार मिलने का प्रश्न—ध्वज-गज में विलम्ब से प्राप्ति कहना और वृष–सिंह में शीघ्र ही प्राप्ति कहना और खर-श्वान में झगड़ा कहना और प्राप्ति में विलम्ब और ध्वांक्ष-धूम्र में प्राप्ति नहीं कहना ॥ ४२ ॥

अथ ग्रामप्राप्तिप्रश्नः

ध्वजे वृषे गजे सिंहे ग्रामप्राप्तिश्च निश्चिता।
श्वाने खरे तथा ध्वांक्षे धूम्रे नास्तीति निश्चितम् ॥ ४३ ॥

अनन्तर ग्राम मिलने का प्रश्न—ध्वांक्ष-वृष-सिंह और गज में ग्राम की प्राप्ति निश्चय करके कहना। और श्वान-खर-ध्वांक्ष-धूम्र में निश्चय करके नहीं कहना ॥ ४३ ॥

अथ कार्यसिद्धिप्रश्नः

गजे ध्वजे स्थिरं कार्यं त्वरितं वृष-सिंहयोः।
दीर्घकाले खरे श्वाने ध्वांक्षे धूम्रे न सिध्यति ॥ ४४ ॥

तदनन्तर-कार्य सिद्धि का प्रश्न—गज-ध्वांक्ष में विलम्ब से कार्य कहना और वृष-सिंह में शीघ्र कार्य की सिद्धि कहना, खर-श्वान में बहुत दिनों में और ध्वांक्ष-धूम्र में कार्य की सिद्धि नहीं कहना ॥ ४४ ॥

अथ वन्दिमोचनप्रश्नः

धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे वन्दी शीघ्रं प्रमुच्यते।
वृषे गजे ध्वजे सिंहे वन्दिकष्टं समादिशेत् ॥ ४५ ॥

अनन्तर कैदी के छूटने का प्रश्न—धूम्र-श्वान-खर-ध्वांक्ष में बन्दी शीघ्र छूटे-वृष-गज-ध्वज-सिंह में वंदी को कष्ट हो, ऐसा कहना ॥ ४५ ॥

अथ कालनियमप्रश्नः

ध्वजे सप्तदिनं ज्ञेयं सिंहे पक्षं तथैव च।
वृषे मासश्च विज्ञेयो गजे मासत्रयं तथा ॥ ४६ ॥
श्वाने खरे च षण्मासं धूम्रे ध्वांक्षे च वर्षकम्।
इति कालं वदेत् प्रश्ने सर्वकार्येषु चिन्तयेत् ॥ ४७ ॥

इसके अनन्तर-काल-नियम का प्रश्न-ध्वज में सात दिन जानना—सिंह में पक्ष भर १५ दिन और वृष में मास जानना, गज में तीन मास कहना ॥४६॥

श्वान-खर में छ मास कहना—और ध्वांक्ष-धूम्र में वर्ष भर कहना-इस तरह प्रश्न में काल-नियम कहना (सर्व कार्य के विषय में चिन्तन करके) ॥४७॥

अथ देवपूजाप्रश्नः

ध्वजे भैरवपूजा स्याद् धूम्रे च जगदम्बिकाम् ।
सिंहे च सूर्यभक्तिं च श्वाने वायुसुतस्तथा ॥ ४८ ॥
वृषे रुद्रार्चनं चैव खरे वागीश्वरीं तथा ।
गणेशं गजराजाख्ये ध्वांक्षे च पितृपूजनम् ॥ ४९ ॥

अनन्तर देवपूजन रोगादिक में विचार के लिये—ध्वज में–भैरव का पूजन और धूम्र में जगन्माता की, सिंह में सूर्यदेव की आराधना करना और श्वान में वायुसुत श्री हनुमान् जी की ॥ ४८ ॥

वृष में शिव जी का पूजन, खर में वागीश्वरी देवी का और गज में गणेश जी का पूजन और ध्वांक्ष में पितृ गणों का पूजन करना ॥ ४९ ॥

अथ ग्रह-दानानि

गोधूमान्नं ध्वजे दद्याद् धूम्रे चैव तिलप्रदः ।
पीतवस्त्रं च सिंहे च श्वाने च बलिविस्तरम् ॥ ५० ॥

तदनन्तर ग्रहों के दान–ध्वज में गोधूम (गेहूँ) का दान, धूम्र में तिल, सिंह में पीला कपड़ा, श्वान में बलिदान विस्तार पूर्वक ॥ ५० ॥

वृषे च तण्डुलं प्रोक्तं खरे च चणकं तथा ।
गजे गुडं सदा देयं ध्वांक्षे च यवनालकम् ॥ ५१ ॥

वृष में चावल दान करना, खर में चना दान, गज में गुड़ देना, ध्वांक्ष में यवनाल देना ॥ ५१ ॥

—:०:—

अथ पञ्चमं प्रकरणम्

अथ प्रश्नाष्टकं, तत्र प्रथमध्रुवांकाः

लाभालाभौ बाहुवेदौ ४२। जीवनमरणे खवेदौ ४०। सुखदुःखे बाणवह्नौ ३५। गमनागमने वेदाग्नी ३४। जयपराजये बाणाग्नी ३५। वर्षाप्रश्ने युग्माग्नी ३२। यात्राप्रश्ने बाणाग्नी ३५। गुर्विणीप्रश्ने युग्माग्नी ३२। इति ध्रुवांकाः।

जैसे किसी ने पूछा कि हमें लाभ होगा या नहीं ? इन दोनों प्रश्नों में बाहु कहिये दो वेद नाम चार दोनों मिलाने से ४२ हुए 'अंकानाम् वामतो गतिः' इस प्रकार अंकों की वाम भाग से गणना होती है। इससे इस प्रश्न में इतने ध्रुवांक हुए। और जीने-मरने के प्रश्न में ख कहिये शून्य वेद चार दोनों मिलाने से ४० इस प्रश्न में ध्रुवांक होते हैं। सुख-दुःख के प्रश्न में बाण ५ वह्नि ३ दोनों ३५, गमन और आगमन इसमें वेद चार ४ अग्नि ३ दोनों अंक मिलाने से ३४ हुए, और जय-पराजय के प्रश्न में बाण ५ अग्नि ३ दोनों अंक मिलाने से ३५ हुए। वृष्टि होगी या नहीं उसके युग्म २ अग्नि ३ दोनों के योग से ३२ होते हैं, यात्रा के प्रश्न में बाणाग्नी बाण ५ अग्नि ३ अर्थात् ३५ अंक होते हैं, गर्भवती के प्रश्न में युग्माग्नी युग्म २ अग्नि ३ यानी ३२ ध्रुवांक होते हैं।

अथाक्षरांकध्रुवाः

अ २४ आ २१ इ १२ ई १८ उ २५ ऊ २२ ए १९ ऐ २९ ओ १९ औ २५ अं १० अः २२। क २१ ख ३१ ग १० घ १८ ङ २१ च २७ छ १६ ज ३४ झ २५ ञ २६ ट २१ ठ ३५ ड १३ ढ १४ ण १७ त २७ थ १३ द २६ ध १८ न १८ प २८ फ २७ ब २१ भ २६ म १६ य ४२ र ११ ल ९ व ७ श २५ ष ११ स २५ ह १२ क्ष ५ इत्यक्षरांकाः।

इसके अनन्तर–अकारादिक स्वरों का और ककारादिक वर्णों का ध्रुवांक लिखते हैं। अकार का २४ चौबीस अंक होता है। आकार का २१ एकइस होता है। ह्रस्व इकार का १२ बारह, दीर्घ ईकार का १८ अठारह, उकार का २५

ऊकारका २२ । एकार का १९, ऐकार का २९, ओकार का १९ औकार का २५, अंकार का १०, अःकार का २२, स्वरांक के अनन्तर वर्णांक को लिखते हैं। क कारका २१ ख कारका ३१ ग कारका १० घ कारका १८ ङ कारका २१ च २७ छ १६ ज ३४ झ २५ ञ २६ ट २१ ठ ३५ ड १३ ढ १४ ण कारका १७ त २७ थ १३ द २६ ध १८ न १८ प २८ फ २७ ब २१ भ २६ म १६ य ४२ र ११ ल ९ व ७ श २५ ष ११ स २५ ह १२ क्ष कारका ५ ध्रुवांक होते हैं।

प्रातःकाले बालकद्वारा वृक्षस्य नामग्रहणं कारयितव्यम् । मध्याह्ने तरुण-द्वारा पुष्पस्य नामग्रहणम् ।

अपराह्णे वृद्धद्वारा फलस्य नामग्रहणम् । अक्षरांकं प्रत्येक गृहीत्वा यथोदित-ध्रुवांके योजयित्वा स्वस्वभाग्यशेषांकेन फलं वदेत् । तथाहि लाभालाभे त्रिभिर्भागैः । एकेन लाभः, द्वाभ्यां स्वल्पलाभः, शून्ये हानिः ॥ १ ॥ जीवनमरणे त्रिभिर्भागैः एकेन जीवनम्, द्वाभ्यां कष्टसाधनम्, शून्ये मृत्युः ॥ २ ॥ सुखदुःखे द्वाभ्यां भागः, एकेन सुखम्, द्वाभ्यां दुःखम् ॥ ३ ॥ गमनागमने त्रिभिर्भागैः, एकेन गमनं, द्वाभ्यां स्थितिः, शून्ये मृत्युः ॥ ४ ॥

प्रातःकाल के विषय मे बालक के मुख से किसी वृक्ष का नाम कहलाना, मध्याह्न समय में युवा पुरुष के मुख मे किसी पुष्प का नाम ग्रहण कराना ।

सायंकाल में वृद्ध के मुख मे फल का नाम ग्रहण कराना, तदनन्तर जो-जो अक्षर कहे उन अक्षरों के जो-जो अंक हैं उन अंकों को एक मे जोड़ दे, अनन्तर लाभादि विषय में जिस विषय का प्रश्न हो उनके जो ध्रुवांक हैं उनमें ये जो इकट्ठे किये हुए अंक हैं उनको मिलाये, पीछे अपने-अपने भाग के अंकों से भाग देने पर शेष जो बचे उससे फल कहे—भाग के अंक लिखते हैं । लाभालाभ के प्रश्न में तीन का भाग देना, एक बचे तो लाभ, दो बचे तो थोड़ा लाभ, शून्य बचे तो हानि कहना ॥ १ ॥ और जीवन-मरण के प्रश्न में तीन का भाग दे । एक बचे तो जीवन कहे, दो बचे तो कष्टसाध्य, शून्य बचे तो मृत्यु कहना ॥२॥ सुख-दुःख के प्रश्न में दो का भाग दे । एक बचे तो सुख, दो बचे तो दुःख कहना ॥३॥ गमन होगा या नहीं ? ऐसे प्रश्न में तीन का भाग देना । एक बचे तो गमन, दो बचे तो गमन नहीं, शून्य बचे तो गमन में मृत्यु हो ॥ ४ ॥

जयपराजये त्रिभिर्भागैः एकेन जयः, द्वाभ्यां सन्धि., शून्ये भंग. ॥ ५ ॥ वर्षा-काले त्रिभिर्भागैः। एकेन वर्षा, द्वाभ्यां स्वल्पवर्षा, शून्येऽनावृष्टिः ॥ ६ ॥ यात्राप्रश्ने त्रिभिर्भागैः एकेन सुयात्रा, द्वाभ्यां मध्यमा, शून्ये मरणम् ॥७॥ गुर्विणी-प्रश्ने त्रिभिर्भागैः। एकेन पुत्रः, द्वाभ्यां कन्या, शून्ये मरणम् ॥ ८ ॥

जय-पराजय के प्रश्न में तीन का भाग दे। एक बचे तो जय कहना, दो बचे तो मेल कहना, शून्य बचे तो पराजय कहना ॥ ५ ॥ वर्षा के प्रश्न में तीन का भाग देना। एक बचे तो वृष्टि, दो बचने से थोड़ी वृष्टि, शून्य बचने से अनावृष्टि कहना ॥ ६ ॥ यात्रा के प्रश्न में तीन का भाग देना। एक बचे तो भलीभाँति यात्रा हो, दो बचे तो मध्यम यात्रा, शून्य बचे तो यात्रा मे मृत्यु कहना ॥ ७ ॥ गर्भ के प्रश्न में तीन का भाग देना। एक बचे तो पुत्र कहना, दो बचे तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भवती का नाश कहना ॥ ८ ॥

इति प्रश्नाष्टकं समाप्तम्।

अथ षष्ठं प्रकरणम्

अर्कमूलाधारेण शुभाऽशुभप्रश्नः

महादेवं नमस्कृत्य केवलं ज्ञानभास्करम् ।
वक्ष्ये सद्गुरुणादिष्टं ज्ञेयं शुभमथाऽशुभम् ॥ १ ॥

ज्ञान के सूर्य, महादेवजी को केवल नमस्कार करके जानने योग्य शुभ और अशुभ फल कहूँगा, जो कि सद्गुरु ने बताया है ॥ १ ॥

अर्कवारे अर्कमूलमुत्पाट्य तस्योपवास कृत्वा अवजदादि तस्मिन् विलिख्य प्रश्नकर्त्ता मन्त्रेण सम्मन्त्र्य त्रिवारं भूमौ क्षिपेत्—ॐ नमो भगवति कूष्माण्डिनि देवि सर्वकार्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एहि एहि वरदे हिलि हिलि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि स्वाहा ।

स्पष्टार्थ चक्रम

१	अ अ अ	१७	व व व	३३	द द द	४९	ज ज ज
२	अ अ द	१८	व व अ	३४	द ज द	५०	ज ज द
३	अ ज द	१९	व व ज	३५	द द ज	५१	ज द द
४	अ व द	२०	व द व	३६	द द अ	५२	ज द व
५	अ द व	२१	व ज व	३७	द ज अ	५३	ज व द
६	अ व अ	२२	व व द	३८	द अ अ	५४	ज ज व
७	अ व ज	२३	व द द	३९	द व द	५५	ज द ज
८	अ द अ	२४	व ज द	४०	द अ द	५६	ज अ द
९	अ अ व	२५	व द ज	४१	द द व	५७	ज व ज
१०	अ द द	२६	व ज अ	३२	द ज व	५८	ज अ व
११	अ द ज	२७	व व अ	४३	द व ज	५९	ज ज अ
१२	अ ज ज	२८	व द अ	४४	द अ ज	६०	ज द अ
१३	अ व व	२९	व अ ज	४५	द व अ	६१	ज व व
१४	अ क्ष ज	३०	व अ अ	४६	द अ व	६२	ज अ ज
१५	अ घ अ	३१	व अ द	४७	द व व	६३	ज अ व
१६	अ ज व	३२	व ज ज	४८	द ज ज	६४	ज अ अ

रविवार के दिन अर्क (मन्दार) को जड़ उखाड़ कर चार पहल का पासा बनावे और उसी दिन उसका व्रत करके यानी पासे का पूजन करे। उस पर पहले के क्रम मे ये चार, अ, व, ज, द अक्षर लिख दे। प्रश्नकर्त्ता 'ॐ नमो भगवति कूष्माण्डिनि···' इत्यादि मंत्र को पढ़कर पासे को अभिमंत्रित करके भूमि पर तीन बार फेंके और जो अक्षर आवे उनका फल पुस्तक में देख कर कहे।

(१) अ, अ, अ—सुनो पृच्छक ! जो काम तुम सोचते हो उस कार्य में बहुत सन्तोष होगा, मन में धीरज धरो, आपही काम सिद्ध हो जायगा, सन्देह नहीं।

(२) अ, अ, द—सुनो पृच्छक ! जो तुम सोचते हो, वह कार्य सम भाग है, बहुत सुख से शून्य कार्य है, वह सत्य हो जायगा, सन्देह नहीं।

(३) अ, ज, द—सुनो पृच्छक ! जो पुत्र कार्य सोचते हो वह सब होगा, तू इसको छोड़ दे, और कार्य कर, दूसरी चिन्ता कर, उसी मे लाभ होगा।

(४) अ, व, द— सुनो पृच्छक ! जिसका तुम चिन्तन करते हो, वह कार्य बहुत दिनों मे होगा, गायत्री देवी का इष्ट करो, कार्य सम भाग है परन्तु अर्थ का लाभ होगा।

(५) अ, द, व—सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो उसमें तुमको लक्ष्मी की प्राप्ति होगी, और सहज बन्धुओं से सन्तोष होगा। तुम्हारे आगे शत्रु लोग शिर नवावेंगे, सन्देह की कोई बात नहीं, इसे सत्य समझो।

(६) अ, व, अ—सुनो पृच्छक ! जो तुम सोचते हो सो कार्य कठिन है, जिससे तुम बात करते हो, वह तुम्हारा शत्रु है। अपना काम सावधानी से करो।

(७) अ, व, ज—सुनो पृच्छक ! तुम को चिन्ता बहुत है, तू अकेला है, भार बहुत है, तुझ अकेले से कार्य बन जावेगा, सब शोक छोड़, कल्याण होगा, पहले तेरे साथी लोगो ने जो सलाह दी है, उसे मत मान।

(८) अ, द, अ—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, वह कार्य सम भाग है, तू अर्थ लाभ चाहता है, शीघ्र कार्य सिद्ध होगा।

(९) अ, अ, व—जो तू मन में सोचते हो, उस कार्य में बहुत विलम्ब है, तू किसी की शिक्षा मत मान, केवल अपनी रक्षा करता रह।

(१०) अ, द, द—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, उसमें विलम्ब बहुत है, मति ठीक नहीं है, कुबुद्धि है, इस कारण से तेरा कार्य कठिन है उसमें भला न होगा।

(११) अ, द, ज—सुनो पृच्छक ! जो तुम सोचते हो, वह काम रामजी के कार्य के समान होगा, राम मंत्र का जप करते रहो, अपना मन दृढ़ करो, धैर्य से सफलता प्राप्ति होगी ।

(१२) अ, ज, ज—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है सो कार्य सफल होगा, तुम कुबुद्धि को छोड़ दो, सुबुद्धि धारण करो, तब प्रसन्नता से सब काम बनेगा, अब दिन अच्छे हैं ।

(१३) अ, व, व—सुनो पृच्छक ! जिस कार्य के निमित्त पूछते हो, वह काम सफल होगा, तुम्हारे शत्रु भला नहीं होने देते, उनसे सतर्क रहना—शत्रु का बुरा होगा, तुम किसी का बुरा मत करो, परमेश्वर भला करेगा ।

(१४) अ, अ, ज—सुनो पृच्छक ! जिस कार्य के निमित्त पूछते हो, वह कार्य कठिन है, जैसे असवार घोड़े पर चढ़ भाग निकले, वैसा कार्य तुम्हारा है, कुछ थोड़ा सा सहज में होगा ।

(१५) अ, ज, अ—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, वह कार्य सफल होगा ।

(१६) अ, ज, व—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, उसमें भगवान् भला करेंगे, तेरे मन का भ्रम दूर होगा, उद्यम करो, तत्काल सिद्ध होगा ।

(१७) व, व, व—सुनो पृच्छक ! तेरा कार्य तत्काल सफल होगा, तुम अपने इष्टदेवता की पूजा करो ।

(१८) व, व, अ—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, सो कार्य तत्काल होगा, किसी का विश्वास नहीं करना, जो लोग तेरी बड़ाई करते हैं, पीछे शत्रु भाव रखते हैं, उनका कहना कभी न मानना, चिन्ता मत करो, इच्छा के अनुसार फल मिलेगा ।

(१९) व, व, ज—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, सो जाना चाहते हो, जाने से अर्थलाभ होगा, कार्य की चिन्ता मत करो ।

(२०) व, द, व—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचते हो उस कार्य में मन लगाकर उपाय करो, तो वह कार्य आनन्द से पूर्ण होगा और बहुत लाभ भी होगा ।

(२१) व, ज, व—सुनो पृच्छक ! जो तू सोच रहा है, उस कार्य में

तुम्हारा मन बहुत चञ्चल हो रहा है, मन को शान्त करो, चिन्ता-सन्देह दूर होगा, कुछ धर्म कार्य करो।

(२२) व, व, द—सुनो पृच्छक ! जो तू सोच करता है, उससे बन्धुओं में प्रीति होगी।

(२३) व, द, द—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, उसको परमेश्वर पूरी करेगा। तेरे बन्धु-मित्र भला नहीं चाहते हैं। भगवान् का स्मरण करते रहो।

(२४) व, ज, द—सुनो पृच्छक ! तुम जो चित्त में सोचते हो वह अर्थ का है, धन प्राप्त होगा, कुछ अल्प कष्ट होगा, अन्त में परमेश्वर भला करेगा।

(२५) व, द, ज—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, उस कार्य का कुछ अंश सिद्ध होगा, सुख आनन्द बहुत प्राप्त होगा, चिन्ता मत करो।

(२६) व, ज, अ—सुनो पृच्छक ! जो तुम सोचते हो, सो कार्य कठिन है, उसका उद्योग मत करो, करने से नहीं होगा।

(२७) व, अ, व—सुनो पृच्छक ! तुम्हारे कार्य का एक शत्रु है, वह बुरा चाहता है, शत्रु आप ही दूर हो जायेगा, वह कार्य पाँच पंचों से मिलकर सिद्ध होगा।

(२८) व, अ, ज—सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्ता करते हो, उस कार्य के बहुत शत्रु हैं, किसी का विश्वास नहीं करना, कार्य अधिकता से सिद्ध नहीं होगा, और जो तू इस कार्य में हठ करेगा तो कष्ट प्राप्त होगा।

(२९) व, अ, ज—सुनो पृच्छक ! यह कार्य बहुत कष्ट का है, लाभकारी थोड़ा है, जैसे लोहे की नाव से समुद्र तरा चाहे वैसा ही तेरा कार्य है, इसका यत्न मत करो, सिद्ध नहीं होगा।

(३०) व, अ, अ—सुनो पृच्छक ! तेरे कार्य में विलम्ब है, समय पाकर होगा। जैसे जल की मछली जल बिना पल भर में हाथ आ जाती है और जल बिना मर जाती है, इसी प्रकार यह कार्य बड़े प्रयत्न और यत्न से सिद्ध होगा, परन्तु नाश तत्काल हो जायेगा, इससे यत्न मत करो।

(३१) व, अ, द—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचते हो सो कार्य बहुत शीघ्र सिद्ध होगा, चित्त को दृढ़ करो, जानना सैर करना छोड़ दो, कार्य का विचार करो। वह सफल होगा। चिन्ता मत करो।

(३२) व, ज, ज—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, वह तुरन्त सिद्ध होगा। परमेश्वर की कृपा से अर्थलाभ भी होगा, इसकी शीघ्रता करो।

(३३) द, व, द—सुनो पृच्छक ! इस कार्य का उद्यम मत करो। यह भाई-बन्धु, मित्र-कुटुम्बियों के बल से सफल होगा, अकेले की बात ही क्या है, इससे मिलकर करो।

(३४) द, ज, द—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है, सो जानना चाहता है। इसका उद्यम करने से अर्थ लाभ होगा, इससे मिलकर करो।

(३५) द, द, ज—सुनो पृच्छक ! जो तू सोच करता है, सो मिलना कठिन है. इसे छोड़ दे, अन्य सब सिद्ध होगा।

(३६) द, द, अ—सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्तन करता है, सो कार्य दूर है, जैसे काम अभागे का कार्य भाग्य से सन्तोष से सिद्ध होगा।

(३७) द, ज, अ—सुनो पृच्छक ! जो तू कार्य चिन्तन करता है। उसके बहुत शत्रु हैं, तुम्हारा बुरा चाहते हैं, उनके भरोसे पर कार्य मत करो, क्षेत्र सन्तोषपूर्वक काम सिद्ध होगा।

(३८) द, अ, अ—सुनो पृच्छक! जो तुम चिन्तन करते हो वह कार्य सफल होगा। अब तुम्हारा भाग्य उदय होगा। कुछ पुण्य करते रहो, शीघ्र ही पुत्र, लक्ष्मी, यश मिलेगा। कुशलता के साथ प्रसन्नता होगी।

(३९) द, व, द—सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करता है वह कार्य दुष्ट आप है, इस काम से कुछ प्राप्त तो होगा, परन्तु तुम अपने भाई-बन्धुओं से मेल परस्पर करो, विरोध करना छोड़ दो, काम सफल होगा।

(४०) द, अ, द—सुनो पृच्छक ! तुम मन का किया चाहते हो, इस कारण से कर्म के ऊपर ध्यान धरो, तुमको आनन्द प्राप्त होगा।

(४१) द, द, व—सुनो पृच्छक ! इस कार्य के होने पर आपत्ति बहुत है पर तेरे शत्रु भला नहीं चाहते, विश्वास मत करना अफल होगा।

(४२) द, ज, व—सुनो पृच्छक ! जो तू इच्छा करता है, उसे छोड़कर अपने कार्य का उद्योग करो, सिद्ध होगा।

(४३) द, व, ज—सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्तन करते हो, उससे अर्थ लाभ होगा। पुत्र लाभ, यश अधिक प्राप्त होगा, कामना पूर्ण होगी।

(४४) द, अ, ज—सुनो पृच्छक ! तुम उद्यम किया चाहते हो और कार्य का चिन्तन करो, तुम्हारे मनुष्य मनके शुद्ध नहीं हैं। इस काम का अच्छा फल है।

(४५) द, व, अ—सुनो पृच्छक ! तेरे उद्यम के दिन हैं, तेरा कार्य सर्व सिद्ध होगा। कुछ पुण्य कर्म करते रहो।

(४६) द, अ, व—सुनो पृच्छक ! तुम्हारे लिये सब वस्तु मिलेगी, धैर्य करो, पुण्य से सब कार्य सिद्ध होगा, चिन्ता मत करो।

(४७) द, व, व—सुनो पृच्छक ! तेरे तो क्षेत्रपाल का उद्यम है, उसकी पूजा करो, अन्त में कार्य की सिद्धि होगी।

(४८) द, ज, ज—सुनो पृच्छक ! जो तुम सोचते हो, सो कार्य में भला न होगा, छोड़ दो, पुण्य (जप, पूजा-पाठ, दान) करो तब सब कार्य सिद्ध होंगे।

(४९) ज, ज, ज—सुनो पृच्छक ! सर्व सिद्धि होगी, जैसे द्वितीया की चन्द्रमा की कला दिन-दिन बढ़ती है, इस प्रकार तेरा काम दिन-दिन सिद्ध होगा।

(५०) ज, ज, द—सुनो पृच्छक ! तुम इष्टदेवता का स्मरण किया करो, मनोकामना सिद्ध होगी, सर्वजन की रक्षा होगी।

(५१) ज, द, द—सुनो पृच्छक ! तेरे काम का एक शत्रु है, उसे बहुत बली राहु समझना, विश्वास नहीं करना, दिन पाय के कार्य सफल होगा।

(५२) ज, द, व—सुनो पृच्छक ! जो कार्य तुम सोचते हो, सो कार्य सहज में होगा। इष्टदेवता की पूजा करो।

(५३) ज, व, द—सुनो पृच्छक ! जो तू चिन्ता करता है सो कार्य कठिन है, तुम्हारे मित्र कपटी हैं, उनका कहना न मानना—अपने भाई—मित्रों को देखते रहना, तब कार्य सफल होगा।

(५४) ज, ज, व—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचता है। उस कामना को परमेश्वर भला करेगा, तुम्हारे बुरे दिन गये, भले दिन आये हैं।

(५५) ज, द, ज—सुनो पृच्छक ! यह कार्य करने से तुम को सिद्धि होगी, कुछ जप-होम आराधना करो।

(५६) ज, अ, द—सुनो पृच्छक ! तुम और की आशा करते हो। आशा भगवान् की करनी चाहिये, उद्यम करने से कार्य सिद्ध होगा, चिन्ता मत करो।

(५७) ज, व, ज—सुनो पृच्छक ! तेरा कार्य तत्काल होगा परन्तु तुम धैर्य करो, धैर्य करने से सुख मिलेगा।

(५८) ज, अ, व—सुनो पृच्छक ! तेरा मन भ्रम में है, जिस कार्य का उद्यम करते हो उसमें बहुत श्रम है, इसे छोड़ और काम करो, होगा।

(५९) ज, ज, अ—सूनो पृच्छक ! तुम अर्थ की चिन्ता करते हो, उसका फल तुम शीघ्र ही पाओगे, पहिले तो तुम अधिक उद्यम किये थे परन्तु अब जो उद्यम करोगे—तो सब कार्य सिद्ध होगा।

(६०) ज, द, अ—सुनो पृच्छक ! जो तुम चिन्ता करते हो सो कार्य विपरीत है यदि आगम चाहते हो तो, इष्टदेवता की पूजा करो, कार्य सफल होगा।

(६१) ज, व, ब—सुनो पृच्छक ! यह कार्य भला नहीं, दीपक के समान है। जब तक तेल भरा रहता है, तब तक जलता है, और जब वन का प्रचण्ड पवन लग जाय तो बुझ जाता है, इस प्रकार तेरा कार्य है—विश्वास किसी पर मत करना, उद्यम करते रहना, कार्य सफल होगा।

(६२) ज, अ, ज—सुनो पृच्छक ! यह कार्य तेरा कठिन है, बिना कष्ट के न होगा, तेरे शत्रु कार्य को बिगाड़ते हैं, उनका विश्वास न करना, अन्त में भला होगा।

(६३) ज, व, अ—सुनो पृच्छक ! जो तू सोचते हो, उसका क्षण में बनाव और क्षण में बिगाड़ दीख पड़ता है, कार्य को हुआ कहते हो, परन्तु होता नहीं, कुछ प्रयोग बिना यह काम सिद्ध न होगा, इससे कुछ गायत्री का जप-होम,स्तोत्र पाठ करो, तब इसकी सिद्धि होगी।

(६४) ज, अ, अ—सुनो पृच्छक ! यह कार्य कठिन है।

इति प्रश्न-फल-गणना समाप्त।

परिशिष्ट

अथ मुष्टिकादिप्रश्नज्ञानम्

धनु९मीन१२श्च मिथुनं३ कन्या६गर्भ इति स्मृतः।
अज१कर्क४तुला७चैव मकरं द्वारकं स्मृतम् ॥ १ ॥
वृष२वृश्चिक८सिंहे च ५कुंभे११ बाह्य इति स्मृतः।
द्विस्वभावानि ३।६।९।१२गर्भाणि चराणि १।४।७।१०द्वारभानि च ॥२॥
स्थिराणि २।५।८।११बाह्यभावानि ज्ञातव्यं सूक्ष्मदृष्टिभिः।
मुष्टिचिन्तनवेलायां हस्तयोरुभयोरपि ॥ ३ ॥
द्वारभे गर्भभे चैव हस्ते सव्ये विनिर्दिशेत्।
बाह्यभे वामहस्ते तु वस्तुनिष्ठां विनिर्दिशेत् ॥ ४ ॥
गर्भे तु १० रक्तवर्णं स्याद् द्वारे२०श्वेतं विनिर्दिशेत्।
गर्भान्ते ३०कृष्णवर्णं स्यादिति ते गर्भलक्षणम् ॥ ५ ॥
द्वारादौ श्वेत१०मित्याहुर्द्वारमध्ये ३० तु रक्तकम्।
द्वारान्ते पीत३०वर्णं स्यादित्येते द्वारलक्षणम् ॥ ६ ॥
बाह्यादौ १०रक्तवर्णं स्याद् बाह्यमध्ये२०तु श्यामलम्।
बाह्यान्ते ३०चित्रवर्णं स्यादित्येते बाह्यलक्षणम् ॥ ७ ॥
गर्भे तु लवणं विद्याद् बाह्ये तु मधुरं तथा।
द्वारे क्षारं विजानीयादित्येतद् द्वारलक्षणम् ॥ ८ ॥
गर्भे तु जीवचिन्ता स्याद् बाह्ये मूलमितं स्मृतम्।
द्वारभे धातुचिन्ता स्याज्ज्ञातव्यं सूक्ष्मदृष्टिभिः ॥ ९ ॥
प्रगर्भे वर्त्तुलं विद्याद् बाह्ये चैव त्रिकोणकम्।
चतुःकोणपरे द्वारे ज्ञातव्यं गणकोत्तमैः ॥१०॥
गर्भचिन्तनवेलायां गर्भे गर्भ विनिर्दिशेत्।
पुत्रो भवति बाह्ये च द्वारभे कन्यकां वदेत् ॥११॥

अपत्यस्यायुषो वृद्धिर्बाह्यभे च प्रकीर्तिताः ।
गर्भे तु रोगयुक्तः स्याद् द्वारेऽल्पायुर्विनिर्द्दिशेत् ॥ १२ ॥
विद्याचिन्तनवेलायां द्वारे विद्या भविष्यति ।
विस्मृतिर्बाह्यभे चैव गर्भे विद्या विनश्यति ॥ १३ ॥
गृहचिन्तनवेलायां शुभं भवति गर्भभम् ।
द्वारभे जयमाप्नोति बाह्ये रोगं विनिर्द्दिशेत् ॥ १४ ॥
युद्धचिन्तनवेलायां युद्धं भवति बाह्यभे ।
द्वारेणाल्पं विजानीयात्सन्धिर्भवति गर्भभे ॥ १५ ॥
जयप्रश्नस्य वेलायां गर्भे पराजयो भवेत् ।
स्वस्थानं जयते बाह्ये द्वारे तु समरो भवेत् ॥ १६ ॥
अर्थचिन्तनवेलायां बाह्ये चार्थस्य सम्भवः ।
सामर्थ्यं गर्भभे चैव अनर्थं द्वारभं स्मृतम् ॥ १७ ॥
यात्राचिन्तनवेलायां गर्भे यात्रा न जायते ।
रोगश्च जायते बाह्ये द्वारे सा न भविष्यति ॥ १८ ॥
कूपचिन्तनवेलायां गर्भे चैव तु निर्जलम् ।
द्वारे पूर्णजलं विद्याद् बाह्ये चैव शिलाजलम् ॥ १९ ॥
बन्धमोक्षणवेलायां गर्भे बन्धं विनिर्द्दिशेत् ।
द्वारभे मुच्यते शीघ्रं बाह्ये पूर्णफलं भवेत् ॥ २० ॥
प्रोक्तं मध्यफलं द्वारे गर्भे वित्तविनाशनम् ।
नष्टद्रव्यस्य वेलायां द्वारे गर्भे च लभ्यते ॥ २१ ॥
न लभ्यते बाह्यभे तु स्त्रीहस्ते द्वारभे भवेत् ।
गर्भे तु बाह्यभे चैव नरहस्ते विनिर्द्दिशेत् ॥ २२ ॥
बाह्यभे बाह्यग्रामे तु द्वारभे च समागमः ।
चौरचिन्तनवेलायां गर्भे जातिसाम्यतः ॥ २३ ॥
बाह्ये चैव तु ग्रामीणो द्वारभे च विदेशगः ।
चौरोन्नतचिन्तायां गर्भे कुब्जं विनिर्दिशेत् ॥ २४ ॥
बाह्यभे चोन्नतं विद्यात्समं द्वारे विनिर्दिशेत् ।
नष्टजीवस्य चिन्तायां द्वारभे शीघ्रदर्शनम् ॥ २५ ॥

गर्भे जीवस्य रोगः स्यान्नष्टं च बाह्यभे तथा ।
क्रयचिन्तनवेलायां मूलमायाति गर्भभे ॥ २६ ॥
बाह्ये तु द्विगुणं वृद्धिर्द्वारे मूलस्य नाशनम् ।
रोगचिन्तनवेलायां गर्भे रोगो विनिर्दिशेत् ॥ २७ ॥
बाह्ये विचिन्तयेन्मुक्तिं द्वारभे मरणं ध्रुवम् ।
प्रभुचिन्तनवेलायां द्वारभे शीघ्रदर्शनम् ॥ २८ ॥
गर्भे रोग विजानीयात् नष्टं चैव तु बाह्यभे ।
वृष्टिचिन्तनवेलायां द्वारे नीरं च वर्षति ॥ २९ ॥
गर्भे चैव अनावृष्टिर्बाह्ये चैव तुषारकम् ।
स्थैर्यप्रश्नस्य वेलायां द्वारभे तु स्थिरा भवेत् ॥ ३० ॥
बाह्ये षण्मासमात्रे तु गर्भे भेदः पृथक् पृथक् ॥

उपर्युक्त श्लोकों का सार वा मूकादि प्रश्नों का चक्र

	३,६,९,१२	१,४,७,१०	२, ५ ८,११
विषय—	गर्भसंज्ञकलग्न (द्विस्वभाव)	द्वारसंज्ञकलग्न (चर)	बाह्यसंज्ञकलग्न (स्थिर)
मुष्टिचिन्तन	दाहिनी	दाहिनी	बायीं
वर्ण	१० अंश तक लाल	२० अंश तक श्वेत ३० लाल	१० अंश तक लाल २० अंश तक काला ३०अंश तक चितकबरा
रस	नमकीन, जीव गोल	क्षार, धातु, चौकोर	मीठ, मूल तिकोना
गर्भ	गर्भ	कन्या	पुत्र
दशा	रोगी	अल्पायु	आयुवृद्धि
विद्या	नाश	विद्याप्राप्ति	विस्मृति
गृहचिन्ता	शुभ	जय	रोग
युद्ध	सन्धि	अल्पयुद्ध	युद्ध
जीत-हार	पराजय	तुमुलयुद्ध	जीत

अर्थ	लाभ	अनर्थ	सम्भव
यात्रा	नहीं होगी,	नहीं होगी	रोग
कूपजल	निर्जल	पूर्णजल	अल्पजल
बंधमोक्ष	बन्धन	शीघ्रमुक्ति	विलम्ब से
फल चिन्ता	विनाश	मध्यमफल	पूर्णफल
नष्ट द्रव्य	मिलेगा	मिलेगा	नहीं मिलेगा
	पुरुषचोर	स्त्री चोर	पुरुष
	,,	समागत	गाँव के बाहर
	सामान्य	विदेशी	गाँवका
नष्ट जीव	रोगी	शीघ्र दर्शन	नष्ट
खरीद	मूल लाभ	मूल नाश	दूना लाभ
रोग	रोगी	मरण	रोगमुक्ति
प्रभुचिन्ता	रोगी	शीघ्रदर्शन	नष्ट
वृष्टि	सुखार	वर्षा	ओला (पत्थर)
स्थिरता चिंतन	भेद (छिन्न-भिन्न)	स्थिर	छः महीना

इति श्रीमहादेव-देवीसंवादे प्रश्नकल्पलता समाप्ता ।

—:०:—